mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-01 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
1 जनवरी 2025
बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

इस साल हार्दिक...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में अज्ञात हमलावरों ने किया जोरदार हमला

कीव (एजेंसी)। पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में मंगलवार को तड़के अज्ञात हमलावरों के हमले में दो पुलिसकर्मी मारे गए और एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह हमला डेरा इस्माइल खान जिले के दरबान कलां में हुआ, जो दक्षिणी वजीरिस्तान की सीमा से सटा हुआ है। हमले के बाद अज्ञात हमलावर भाग गए। पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर तलाशी

अभियान शुरू कर दिया है। प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान के अलग हुए समूह दरबान इलाके में सक्रिय हैं और अक्सर सुरक्षा बलों को निशाना बनाते हैं। कई प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, तालिबान के लड़ाके आमतौर पर शाम के समय जिले की सड़कों पर कब्जा कर सड़कों पर वाहनों की जांच शुरू कर देते हैं। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंदापुर ने चौकी पर हमले की निंदा की और पुलिस से हमले में शामिल लोगों को पकड़ने के लिए त्वरित कार्रवाई करने को कहा। मुख्यमंत्री ने एक अधिकारी सहित दो पुलिसकर्मियों की मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त की। खैबर पख्तूनख्वा के गवर्नर फैसल करीम कुंदी ने भी हमले की निंदा की और अपनी संवेदना व्यक्त की।

नए साल से ठीक पहले रूस ने यूक्रेन को दिखाई अकड

कीव (एजेंसी)। रूस ने मंगलवार को यूक्रेन की राजधानी कीव समेत कई क्षेत्रों को निशाना बनाते हुए मिसाइल और ड्रोन हमले किए। यूक्रेन की वायु सेना ने तड़के तीन बजे बैलिस्टिक मिसाइल के खतरे की सूचना दी, जिसके कुछ ही मिनटों बाद कीव में कम से कम दो धमाके सुने गए। सुबह आठ बजे एक और मिसाइल अलर्ट जारी किया गया, जिसके बाद शहर में कम से कम एक विस्फोट हुआ। स्थानीय प्रशासन ने कहा कि मिसाइल का मलबा राजधानी के डार्नित्स्की जिले में गिरा, लेकिन किसी के हताहत होने या

नुकसान की कोई खबर नहीं है। पूर्वोत्तर में सूमी क्षेत्र के अधिकारियों ने शोस्तका शहर के पास हमलों की सूचना दी। सूमी के मेयर मायकोला नोहा ने कहा कि 12 आवासीय इमारतों के साथ-साथ दो शैक्षणिक परिसरों को भी नुकसान पहुंचा है। वायु सेना ने यूक्रेन के कई अन्य क्षेत्रों को निशाना बनाकर मिसाइलों और ड्रोन से हमला किए जाने की भी सूचना दी है। युद्ध के दौरान यूक्रेन का लगभग आधा ऊर्जा बुनियादी ढांचा नष्ट हो गया है और बड़े पैमाने पर बिजली की आपूर्ति बाधित हुई है। यूक्रेन के पश्चिमी सहयोगियों ने उसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए वायु रक्षा प्रणाली प्रदान की है। लेकिन, रूस ने बड़ी संख्या में मिसाइलों और ड्रोन के साथ संयुक्त हमलों के जरिए उसकी वायु रक्षा को तबाह करने की कोशिश की है।

कोर्ट में अपने बयान से पलटा बाबा सिद्दीकी हत्याकांड का आरोपी

मुंबई (एजेंसी)। बाबा सिद्दीकी हत्याकांड मामले के आरोपी नितिन गौतम सप्रे ने कोर्ट में बयान देते हुए पुलिस पर आरोप लगाया है। दरअसल कोर्ट में सुनवाई के दौरान आरोपी नितिन गौतम सप्रे ने आरोप लगाया कि पुलिस ने धमकी दी कि अगर उसने इकबालिया

बयान देने से मना कर दिया तो उसके परिवार को भी इस मामले में फंसा देंगे। बाबा सिद्दीकी हत्याकांड मामले में गिरफ्तार 26 आरोपियों को मुंबई की विशेष कोर्ट में सोमवार को पेश किया गया। सुनवाई के दौरान इन आरोपियों में से एक नितिन गौतम सप्रे ने इस दौरान पुलिस पर गंभीर आरोप लगा दिए। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बोलते हुए सप्रे ने दावा किया कि उसे न्यायिक हिरासत से बोरीवली पुलिस स्टेशन ले जाया गया और उनसे जबरन बयान देने के लिए मजबूर किया गया। आरोपी ने कोर्ट को बताया कि पुलिस ने दबाव बनाते हुए कहा कि अगर उसने बयान नहीं दिया तो उसके परिवार को भी इसमें फंसा लिया जाएगा। नितिन गौतम सप्रे ने अपने दिए इकबालिया बयान को वापस लेने की इच्छा जताई है और जेल से कोर्ट में अर्जी दाखिल करने की भी तैयारी कर ली है। सप्रे के वकील अजिंक्य मधुकर मिर्गल और ओमकार इनामदार ने पुष्टि की कि वे उनके बयान को वापस लेने के लिए अर्जी दाखिल करेंगे। एडवोकेट मिर्गल ने मामले के बारे में बात करते हुए बताया कि उनके क्लाइंट सप्रे ने ऐसा दावा किया है, ÷उसको मजिस्ट्रेट के सामने यह कबूल करने के लिए धमकाया गया था कि वह अनमोल बिश्नोई के साथ संपर्क में था और उसने मामले में दो आरोपियों को शरण दी थी।

नवनिर्मित राम मंदिर में भगवान राम का आशीर्वाद लेने की होड़

यूपी में ही मनाएंगे नया साल! मंदिरों में उमड़ी भारी भीड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। नया साल हर कोई अपने तरीके से मनाने में जुटा है। नए साल के आगमन में अब कुछ ही घंटे शेष हैं और इसके जश्न के लिए उत्तर प्रदेश में मंदिरों और प्रतिष्ठित धार्मिक स्थलों में लोगों की भारी भीड़ अभी से उमड़ रही है।अयोध्या, वाराणसी और मथुरा में श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। सुरक्षा उपायों और विस्तृत भीड़ प्रबंधन योजनाओं के साथ प्रशासन भी तैयार है ताकि लोग भगवान का दर्शन कर नए साल की शुरुआत करें। भगवान राम की जन्मभूमि से जुड़ा पवित्र शहर अयोध्या 2025 की आध्यात्मिक शुरुआत के लिए मंदिरों और पवित्र स्थलों पर आने वाले तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ का स्वागत करने के लिए तैयार है।

नए साल से पहले अयोध्या में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी जा रही है, खासकर नवनिर्मित राम मंदिर में भगवान राम का आशीर्वाद लेने के लिए हजारों की संख्या में लोग आ रहे हैं। इसके लिए अयोध्या और पास के फैजाबाद में होटल पूरी तरह से आरक्षित हो चुके हैं और मंदिर ट्रस्ट ने अपेक्षित भीड़ को प्रबंधित करने के लिए दर्शन का समय बढ़ा दिया है। एक होटल के मालिक अंकित मिश्रा ने कहा, ÷हम श्रद्धालुओं का स्वागत करने के लिए तैयार हैं और हमारे सभी कमरे 15 जनवरी तक आरक्षित हैं।÷ हिंदू नववर्ष मार्च-अप्रैल के आसपास मनाया जाता है, लेकिन कई श्रद्धालु अंग्रेजी कैलेंडर वर्ष के पहले दिन रामलला के दर्शन करते हैं। स्थानीय पुजारी रमाकांत तिवारी ने बताया, ÷कई लोग भगवान राम के आशीर्वाद के साथ वर्ष की शुरुआत करना चाहते हैं। राम मंदिर में भगवान राम के बाल विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के बाद, 2025 पहला नववर्ष है, जो इसे महत्वपूर्ण अवसर बनाता है। अयोध्या के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजकरण नैयर ने राम मंदिर, हनुमानगढ़ी और गुप्तार घाट जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाने की पुष्टि की है। भगवान शिव की आध्यात्मिक नगरी वाराणसी में इस नववर्ष में बड़ी संख्या में आगंतुकों के आने की उम्मीद है। इसे ध्यान में रखते हुए काशी विश्वनाथ मंदिर ने 31 दिसंबर से एक जनवरी तक ÷स्पर्श दर्शन÷ पर प्रतिबंध लगा दिया है। आगंतुकों को दूर से ही भगवान के दर्शन करने की अनुमति होगी। शहर की पुलिस ने व्यापक सुरक्षा उपाय लागू किए हैं, जिसमें अस्सी घाट और संकट मोचन मंदिर सहित प्रमुख स्थानों पर 45 ड्यूटी पॉइंट बनाए गए हैं। काशी जोन के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) गौरव बंसल ने पुष्टि की कि प्रमुख स्थानों पर एनडीआरएफ, जल पुलिस और पीएसी की टीमें तैनात की गई हैं।

रेलवे ट्रैक उड़ाने की एक और साजिश

पुणे (एजेंसी)। पुणे के उरुली कंचन क्षेत्र में रविवार की रात रेलवे ट्रैक पर गैस से भरा सिलेंडर

रखकर दुर्घटना करने की कोशिश की गई। इस घटना का खुलासा लोको पायलट की सतर्कता से हुआ। इस संबंध में कंचन पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज किया है। यह घटना उस वक्त सामने आई जब लोको पायलट शरद शाहजी वाल्के (उम्र 38 वर्ष) रेलवे लाइन का निरीक्षण कर रहे थे। रविवार रात करीब 11 बजे जब वे ट्रैक पर निरीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने देखा कि रेलवे ट्रैक के पास प्रिया गोल्ड कंपनी का गैस सिलेंडर रखा हुआ था। जब उन्होंने सिलेंडर उठाने की कोशिश की तो देखा कि इस सिलेंडर में गैस (वजन करीब 3900 किलो) थी। लोको पायलट ने तुरंत सिलेंडर को रेलवे ट्रैक से दूर हटा दिया और संभावित दुर्घटना को विफल कर दिया। शरद वाल्के ने तुरंत इसकी सूचना पुलिस और रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों को दी। इसके बाद उरुली कंचन पुलिस ने रेलवे की धारा 150, 152 के तहत अज्ञात व्यक्ति पर दुर्घटना का प्रयास करने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। घटना की गंभीरता को देखते हुए रेलवे और रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने घटना स्थल का दौरा किया। दौंड डिवीजन के उपविभागीय पुलिस अधिकारी बापुराव दादास और उरुली कंचन पुलिस स्टेशन के पुलिस निरीक्षक शंकर पाटिल ने मौके पर पहुंचकर घटना का जायजा लिया और सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बीते महीने उत्तर प्रदेश के कानपुर से ऐसी घटनाएं सामने आई थीं, जहां ट्रेन को उड़ने की साजिश से पटरी पर गैस सिलेंडर रखा गया था।

भारतीय नर्स को यमन में मिली मौत की सजा

अब 'ब्लड मनी' देकर ही बचाई जा सकती है जान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल की रहने वाली नर्स निमिषा प्रिया को यमन में मौत की सजा सुनाई गई है। इस मामले में यमन की सुप्रीम कोर्ट में निमिषा ने अर्जी दाखिल की जिसे यमन की सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है। दरअसल निमिषा पर एक यमनी नागरिक की हत्या का आरोप है। केंद्र सरकार ने बताया कि यमन की सुप्रीम कोर्ट से अर्जी खारिज होने के बाद यमन के राष्ट्रपति को अब इसपर फैसला लेना है। ऐसे में अपनी बेटी को बचाने के लिए निमिषा की मां ने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की है। ये बातें इस मामले में सुनवाई के दौरान सामने आई हैं। साथ ही निमिषा की मां ने अपनी यमन की यात्रा को लेकर अनुमति भी मांगी है ताकि वह %ब्लड मनी% के जरिए पीड़ित परिवार को भरपाई कर सके और अपनी बेटी की जान बचा सके।

केरल की रहने वाली निमिषा नर्स है जिसने यमन में अपना क्लीनिक खोला था। जानकारी के मुताबिक, उसकी दोस्ती यमन में एक शख्स से हुई, जिसका नाम था आब्दो महदी। महदी ने उसकी क्लीनिक को खोलने में मदद करने का वादा किया था। यह भी दावा किया जाता है कि महदी ने अपना वादा नहीं निभाया, बावजूद इसके निमिषा ने यमन में अपना क्लीनिक खोल लिया। जानकारी के मुताबिक, इसके बाद महदी निमिषा को परेशान करने लगा और उसे अपनी दूसरी पत्नी बताने लगा। वह बार-बार निमिषा से पैसे मांगता। इस बात को लेकर निमिषा ने पुलिस में शिकायत भी की, जिसके बाद कुछ दिनों तक महदी को जेल में रहना पड़ा। हालांकि जब महदी जेल से वापस आया तो उसने निमिषा का पासपोर्ट अपने कब्जे में ले लिया। जानकारी के मुताबिक, पासपोर्ट को महदी से वापस पाने के लिए निमिषा ने उसे बेहोशी का इंजेक्शन लगाया। लेकिन बेहोशी के इंजेक्शन का डोज ओवरडोज में बदल गया, और महदी की मौत हो गई। इसके बाद निमिषा ने अपनी कलीग हनान के साथ मिलकर महदी के शरीर के टुकड़े कर डाले और उसकी शरीर को पानी के टैंक में फेंक दिया। बता दें कि हनान यमनी नागरिक है। इस मामले में साल 2018 में निमिषा को मौत की सजा सुनाई गई थी, जबकि हनान को आजीवन कैद हुई थी। निमिषा का एक 8 साल का बेटा भी है। निमिषा साल 2018 से ही यमन के सना में काम कर रही है।

गुरुवार को केंद्र सरकार के वकील ने दिल्ली हाईकोर्ट में बताया कि हाल ही में जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक भारतीयों की यमन यात्रा पर लगे प्रतिबंध पर छूट मिल सकती है। लेकिन इसके लिए वजह बहुत स्पेसिफिक होनी चाहिए और समय की भी पाबंदी होनी चाहिए। इससे पहले निमिषा की मां ने कोर्ट को बताया कि उनकी बेटी को बचाने का एक तरीका है कि मृतक के परिजनों से बातचीत की जाए।

घर का दरवाजा बंद कर तीन महिलाओं समेत 4 लोगों पर फेंक दिया तेजाब

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर में शराब के नशे में पड़ोसी ने तीन महिलाओं समेत चार पर तेजाब से हमला कर दिया। आरोप है कि पड़ोसी को लोगों ने गांजा पीने से मना किया तो उसने महिलाओं पर तेजाब फेंक दिया। महिलाओं को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एक महिला की हालत गंभीर है।

मामला मुजफ्फरपुर के औराई थाना क्षेत्र के सरहचिया गांव का है। यहां पर नशा करने से रोकने पर घर में घुस कर तीन महिलाओं समेत चार पर तेजाब फेंक कर हमला कर दिया। इसमे तीन महिला समेत चार लोग झुलस गए। आरोपी ने एक महिला को सिर पर लोहे के रॉड से मारकर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। इस घटना में सास, बहु, देवर और पड़ोस की एक महिला झुलस गई। घायलो में एक महिला की हालत नाजुक बनी हुई है। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगो की मदद से सभी घायलों को इलाज के लिए एसकेएमसीएच में भर्ती कराया गया है। जहां बर्न वार्ड में इलाज चल रहा है। पीड़ित महिला ने बताया कि गांव के विजय शाह जबरन घर में घुस गया। वह घर में गाजा पीना चाहता था। जब सास और देवर ने विरोध किया तो वह मारपीट करने लगा। इसके बाद धमकी दिया कि सभी को तेजाब से जला देंगे और वहां से निकल गया। एक घंटे बाद फिर नशे में धुत विजय, राधे और मुनचुन घर में घुसकर मारपीट करने लगेशोर सुनकर घर की महिला बचाने आई तो आरोपियों ने पिटाई कर दी। इसके बाद आरोपी घर से तेजाब की बोतल ले आया और रूम में बंदकर सभी तेजाब फेंकने लगा।

गौरी शंकर मंदिर में रंगाई पुताई का काम शुरू

मुरादाबाद में 44 साल बाद खुला मंदिर

मुरादाबाद (एजेंसी)। मुरादाबाद में 1980 में हुए सांप्रदायिक दंगे के बाद पिछले करीब 44 वर्षों से मुस्लिम बाहुल्य इलाके मे बंद पड़े गोरी शंकर मंदिर की कल साफ सफाई कराने के बाद आज भारी सुरक्षा व्यवस्था के साथ रंगाई पुताई का कार्य शुरू करा दिया गया है। मंदिर को भगवा रंग से रंगा जा रहा है साथ ही गर्भगृह के मुख्य दरवाजे का नाप भी लिया गया। इसके बाद उसमें कपाट लगाए जाएंगे। इसके अलावा मंदिर में पत्थर व टाइल्स का कार्य भी कराया जाएगा।

नगर आयुक्त दिव्यांशु पटेल ने बताया कि जिलाधिकारी के आदेश अनुसार बंद पड़े गौरी शंकर मंदिर को खुलवाकर उसकी साफ सफाई करा दी गई है। इसके बाद उसकी रंगाई पुताई का कार्य शुरू हो गया है। पत्थर व टाइल्स की जैसी आवश्यकता होगी उसे पूरा करने के बाद स्थापना और अनुष्ठान कराकर पूजा पाठ के लिए जन मानस को सौंप दिया जाएगा।

बता दें कि संभल, काशी और कानपुर के बाद अब मुरादाबाद में एक मंदिर मिला है जोकि कथित तौर पर 44 साल से बंद था। सोमवार को जिला प्रशासन और नगर निगम द्वारा फिर से खोल दिया गया। खुदाई के दौरान प्रशासन को नंदी, हनुमान और एक शिव लिंग की क्षतिग्रस्त मूर्तियाँ मिलीं। चर्चा में यह बात सामने आई कि 1980 के दंगों के दौरान इस मंदिर के पुजारी की हत्या कर दी गई थी और भीड़ ने मूर्तियां तोड़ दी थीं। तभी से मंदिर बंद था। पुजारी के पोते ने सात दिन पहले मुरादाबाद के डीएम अनुज सिंह के कार्यालय में एक आवेदन देकर मंदिर को फिर से खोलने का अनुरोध किया था। शनिवार को पुलिस-प्रशासन की टीम नागफनी क्षेत्र के झब्बू का नाला मोहल्ले में पहुंची, जहां मंदिर स्थित है।

समुद्र की सतह से ऊपर बना देश का पहला 'ग्लास ब्रिज'

37 करोड़ रुपये की लागत

कन्याकुमारी (एजेंसी)। तमिलनाडु के कन्याकुमारी में समुद्र के ऊपर देश के पहले ग्लास ब्रिज यानी कि कांच के पुल का उद्घाटन कर दिया गया है। ये कांच का पुल 77 मीटर लंबा और 10 मीटर चौड़ा है जो कि कन्याकुमारी के तट पर विवेकानंद रॉक मेमोरियल और 133 फीट ऊंची तिरुवल्लुवर प्रतिमा को जोड़ता है। सोमवार की शाम तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने पुल का उद्घाटन किया है। आइए जानते हैं इस पुल की खूबियां।

कन्याकुमारी के समुद्र तट पर बने इस कांच के पुल को देश का पहला ऐसा पुल बताया जा रहा है। ये पुल पर्यटकों को विवेकानंद रॉक मेमोरियल और तिरुवल्लुवर की प्रतिमा और आसपास के समुद्र का बेहतरीन दृश्य दिखाता है। एक पर्यटक अधिकारी ने कहा है कि इस पुल के ऊपर चलने से एक रोमांचक अनुभव प्राप्त होता है।

तमिलनाडु सरकार की ओर से इस कांच के पुल का निर्माण 37 करोड़ रुपये की लागत से कराया गया है। सीएम एमके स्टालिन ने पुल का उद्घाटन दिवंगत मुख्यमंत्री एम करुणानिधि द्वारा तिरुवल्लुवर प्रतिमा के अनावरण की रजत जयंती के अवसर पर किया है। उद्घाटन के बाद, मुख्यमंत्री स्टालिन, उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन, राज्य के मंत्री, सांसद कनिमोझी और वरिष्ठ अधिकारी आदि ने एक साथ पुल पर चल कर इसका अनुभव लिया। इस ग्लास ब्रिज को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की एक दूरदर्शी सोच के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसका मकसद पर्यटकों को आधुनिक सुविधाएं प्रदान करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना है। यह कदम कन्याकुमारी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के प्रयासों का एक हिस्सा है। बता दें कि इस ग्लास ब्रिज को अत्याधुनिक तकनीक से बनाया गया है और इसे खारी हवा, जंग और तेज समुद्री हवाओं सहित कठोर समुद्री परिस्थितियों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

नवगठित पाठ्य-पुस्तक स्थायी समिति की प्रथम बैठक सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सरकार द्वारा हाल ही में पुर्नगठित मध्यप्रदेश पाठ्य–पुस्तक स्थायी समिति की प्रथम बैठक सोमवार 30 दिसम्बर को भोपाल के अरेरा हिल्स स्थित राज्य शिक्षा केन्द्र में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता समिति के नव–नियुक्त अध्यक्ष डॉ. अलकेश चतुर्वेदी ने की। नवगठित समिति की प्रथम बैठक में पाठ्य–पुस्तकों में सम्मिलित करने के लिये विषयों पर विचार–विमर्श किया गया। एनसीईआरटी स्वीकृत कक्षा–10वीं और 11वीं की अंग्रेजी पाठ्य–पुस्तक के विभिन्न पाठों और अंशों पर विचार किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रदेश से जुड़ी सामग्री भी पुस्तकों में शामिल करने की दृष्टि से कक्षा 1, 2, 3 और कक्षा–6 की प्रचलित पुस्तकों के पुनरीक्षण और सामग्री तैयार करने के संबंध में भी विस्तार से चर्चा की गई। बैठक के प्रारंभ में संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने पुर्नगठित समितिके अध्यक्ष डॉ. अलकेश चतुर्वेदी एवं अन्य सदस्यों का पुष्प–गुच्छ भेंटकर स्वागत किया। बैठक में समिति सदस्य डॉ. आशीष भारती, डॉ. बालाराम परमार, डॉ. रविन्द्र कुमार सोहोनी, डॉ. अनुपम जैन, डॉ. प्रेमलता नीलम, श्री रामकुमार वैद्य, डॉ. विनय सिंह चौहान, अपर संचालक लोक शिक्षण श्री आर.के. सिंह एवं सचिव, मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल के प्रतिनिधि तथा राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त संचालक एवं नियंत्रक पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक डॉ. संजय पटवा सहित अकादमिक प्रकोष्ट के अन्य अधिकारी गण भी शामिल हुए।

राज्यपाल पटेल ने प्रदेशवासियों को दी नव वर्ष की बधाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने प्रदेशवासियों को नव वर्ष की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी है। मंगलकामना की है कि नव वर्ष 2025 सभी के लिए सुख, शांति, सद्भाव, समृद्धि और सफलता लेकर आये। उन्होंने कहा है कि नव वर्ष का आगमन जीवन में नए संकल्प और लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ने का अवसर होता है। प्रदेशवासी नव वर्ष का स्वागत, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय भागीदारी, दायित्व बोध के संकल्प के साथ करें। राज्यपाल श्री पटेल ने अपने सन्देश में कहा है कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य के लिए नागरिक संकल्पित हों। नागरिकों से अपील की है कि अपने आचरण और व्यवहार से संविधान से प्राप्त अधिकारों और सौंपे गए कर्तव्यों के पालन के लिए प्रतिबद्ध रहकर समरस समाज निर्माण में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें।

भोपाल से महाकुंभ जाएगी देश की पहली फायर फाइटिंग बोट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल से फायर फाइटिंग बोट महाकुंभ–2025 के लिए प्रयागराज रवाना हो रही है। यह देश की पहली फायर फाइटिंग बोट है, जिसका निर्माण भी भोपाल में हुआ है। यह बोट महाकुंभ के दौरान घाटों पर तैनात रहेगी और आग लगने की आपात कालीन स्थिति में रेस्क्यू का काम करेगी। यूपी फायर सर्विस की तरफ से टेंडर जारी कर भोपाल के पीएस ट्रेडर्स को इस बोट के निर्माण का काम सौंपा था। इस बोट को खासतौर पर कुंभ मेले के लिए ही तैयार किया गया है। बोट की जांच और टेस्टिंग के लिए उत्तर प्रदेश फायर सर्विस से टीम भी आई है। साथ ही एसडीआरएफ को भी टेस्टिंग की प्रक्रिया में सहयोग के लिए तैनात किया गया है। बोट बनाने वाली कंपनी पीएस ट्रेडर्स के ओनर प्रियांश शाह ने बताया कि महाकुंभ में ज्यादा भीड़भाड़ को देखते हुए बोट का निर्माण किया गया है। भीड़ के चलते कई इलाकों में आपात स्थितियों में फायर ब्रिगेड की गाड़ियां नहीं पहुंच पाती। इस स्थिति से निपटने के लिए फायर फाइटिंग बोटों को अलग–अलग घाटों में तैनात किया जाएगा। किसी भी आपात काल की स्थिति में यह बोट तुरंत सहायता प्रदान करने पहुंचेगी और आग पर काबू पाकर फंसे लोगों का रेस्क्यू करेगी। भोपाल से मंगलवार को टेस्टिंग प्रक्रिया पूरी होने के बाद पहली बोट को प्रयागराज के लिए रवाना कर दिया जाएगा। इसके बाद अगले 8 से 10 दिनों के अंदर पांच और बोटों को प्रयागराज भेजा जाएगा। इस बोट में एक समय पर क्रू के अलावा 10 लोगों की बैठने की व्यवस्था है। इस बोट में लगी मोटर डीजल से ऑपरेट होती है। साथ ही इसमें पेट्रोल टैंक भी है।

लाड़ली बहनों को कम से कम ढाई हजार दिए जाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में विधानसभा चुनाव के पहले शुरू की गई लाड़ली बहना योजना में महिलाओं को 3 हजार रुपए प्रतिमाह देने के वादे पर कांग्रेस लगातार हमला कर रही है। अब कांग्रेस ने मप्र सरकार से मांग की है कि नए साल 2025 में ढाई हजार रुपए देना चाहिए। जब 2023 में विधानसभा के चुनाव हो रहे थे तो चुनाव के पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ये घोषणा की थी कि 3 हजार रुपए प्रतिमाह महिलाओं के खातों में डाले जाएंगे।

शासकीय होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय में विभिन्न कार्यों के निर्माण का अनुमोदन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में सोमवार को मंत्रालय स्थित सभाकक्ष में शासकीय होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय की सामान्य परिषद की बैठक हुई।

आयुष मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालयीन गतिविधियों की समीक्षा की एवं विद्यार्थियों के हितों से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। श्री परमार ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के समग्र विकास, बेहतर अध्ययन–अध्यापन, शैक्षणिक एवं अकादमिक गुणवत्ता सुधार हेतु आवश्यक क्रियान्वयन कर, संस्थान की उत्तरोत्तर उत्कृष्टता के लिए कार्य करने के दिशा निर्देश दिए। मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालय में फार्मेसी, अतिरिक्त महिला छात्रावास भवन का निर्माण एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ करने सहित विभिन्न बिंदुओं पर व्यापक चर्चा की। श्री परमार ने महाविद्यालय में पदस्थ व्याख्याताओं एवं अधिकारियों के समयमान–वेतनमान संबंधी प्रक्रिया एवं इसके उपरांत उच्च पद प्रभार प्रक्रिया का भी नियत समयावधि पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने महाविद्यालय में नव

चयनित व्याख्याताओं की नियुक्ति की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालय में औषधी निर्माण शाला (फार्मेसी) शीघ्र प्रारंभ करने के लिए व्यापक कार्य योजना के साथ, आवश्यक यंत्र, उपकरण एवं मशीनरी आदि की उपलब्धता नियमानुसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। श्री परमार ने राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग नई दिल्ली के द्वारा प्रत्यायोजित दो विषयों सामुदायिक चिकित्सा एवं डर्मेटोलॉजी में स्नातकोत्तर एम.डी. होम्योपैथी पाठ्यक्रम प्रारंभ किये जाने एवं इसके लिए मापदण्डानुसार आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मंत्री श्री परमार ने छात्राओं की सुरक्षा के दृष्टिगत वर्तमान में संचालित 200 बिस्तरीय बालिका छात्रावास के साथ, 150 बिस्तरीय अतिरिक्त छात्रावास भवन के निर्माण का अनुमोदन किया। महाविद्यालय भवन के चहुंओर बाउंड्रीवॉल निर्माण करने को भी कहा। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सुलभ आवागमन के लिये कॉलेज बस क्रय करने के लिए भी अनुमोदन किया। महापौर श्रीमती मालती राय ने होम्योपैथिक वेलनेस सेंटर के ऊपर एक फ्लोर के निर्माण कार्य कराये जाने, परिसर में हाईमास्क लाइट लगवाने एवं सीवेज समस्या के निराकरण करने की बात कही। इस अवसर पर प्रमुख सचिव आयुष श्री डी.पी. आहूजा, आयुक्त आयुष श्रीमति उमा आर. माहेश्वरी, राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग नई दिल्ली के प्रतिनिधि एवं संस्थान के प्रधानाचार्य डॉ. एस.के. मिश्रा सहित सामान्य परिषद के अन्य सदस्यगण सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

रिटायर्ड आईएएस मनोज श्रीवास्तव बने राज्य निर्वाचन आयुक्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। रिटायर्ड अपर मुख्य सचिव मनोज श्रीवास्तव मध्यप्रदेश मध्यप्रदेश के नए राज्य निर्वाचन आयुक्त बन गए हैं। सामान्य प्रशासन विभाग ने मंगलवार शाम को आदेश जारी कर दिया है। इससे पहले आयोग के आयुक्त रहे बसंत प्रताप सिंह का 6 माह का अतिरिक्त कार्यकाल 31 दिसंबर पूरा हुआ है। इसके चलते राज्य शासन ने आज ही राज्य निर्वाचन आयुक्त के पद पर नई नियुक्ति के आदेश जारी किए। श्रीवास्तव के पहले इस पद पर पूर्व मुख्य सचिव वीरा राणा और रिटायर्ड एसीएस मलय श्रीवास्तव की भी दावेदारी थी। इसके पहले 30 सितम्बर को पूर्व मुख्य सचिव वीरा राणा के रिटायरमेंट के दिन उन्हें नया राज्य निर्वाचन आयुक्त बनाए जाने के

मनोज श्रीवास्तव

बसंत प्रताप सिंह

आदेश जारी होने वाले थे। राज्य निर्वाचन आयोग में इसकी तैयारी भी कर ली गई थी और बीपी सिंह ने स्टाफ को हाई–टी देकर खुद को कार्यमुक्त भी बता दिया था।

अब तक 5 लाख 86 हजार से अधिक बिजली उपभोक्ताओं ने कराई ई-केवायसी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य शासन की लाभकारी योजनाओं का फायदा लेने के लिए बिजली उपभोक्ताओं को ईकेवायसी कराना अनिवार्य है। उपभोक्ताओं से कहा गया है कि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के उपाय ऐप के जरिए भी ईकेवायसी करा सकते हैं। गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध उपाय ऐप डाउनलोड कर बिजली उपभोक्ता समग्र केवायसी में अपना उपभोक्ता क्रमांक एवं समग्र क्रमांक दर्ज करने के बाद लिंक मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी को दर्ज कर केवायसी प्रक्रिया को पूर्ण कर सकते हैं। केवायसी प्रक्रिया के तहत अब तक 5 लाख 86 हजार 097 उपभोक्ताओं ने सफलतापूर्वक केवायसी करा ली है। कंपनी ने बताया है कि केवायसी प्रक्रिया के तहत नर्मदापुरम ग्रामीण में 70 हजार 628, बैतूल ग्रामीण में 83 हजार 457, राजगढ़ ग्रामीण में 38 हजार 378, शहर वृत्त भोपाल में 46 हजार 223, भोपाल ग्रामीण में 36 हजार 676, गुना ग्रामीण में 31 हजार 623, विदिशा ग्रामीण में 41 हजार 482, सीहोर ग्रामीण में 22 हजार 953, ग्वालियर ग्रामीण में 20 हजार 841, शहर वृत्त ग्वालियर में 35 हजार 255, अशोकनगर ग्रामीण में 17 हजार 249, दतिया ग्रामीण में 21 हजार 306, रायसेन ग्रामीण में 42 हजार 687, शिवपुरी ग्रामीण में 22 हजार 218, हरदा ग्रामीण में 17 हजार 988, श्योपुर ग्रामीण में 08 हजार 930, मुरैना ग्रामीण में 19 हजार 273 एवं भिण्ड ग्रामीण में 08 हजार 930 बिजली उपभोक्ताओं की केवायसी की गई है।

'संकल्प परियोजना' के अंतर्गत खरगोन जिले में एनएमआर, एमएमआर में सुधार के लिये विशेषज्ञों ने किया मंथन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में वर्ष–2030 तक नवजात शिशु मृत्यु दर (ह्रस्र्क्र) को सिंगल डिजिट में लाने के लिये संकल्प परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मध्यप्रदेश भोपाल में को–डेवलपमेंट वर्कशॉप का आयोजन किया गया। को–डेवलपमेंट वर्कशॉप में खरगोन जिले में प्रभावी रणनीतियों को लागू करने के लिए अनुसंधान आधारित कार्य योजना तैयार किए जाने के लिये मंथन किया गया। इस पहल का उद्देश्य नवजात शिशु मृत्यु दर (एनएमआर) और मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) में कमी लाने के लिए एक प्रभावी मॉडल विकसित करना है। खरगोन

जिले में विकसित इस मॉडल को पूरे मध्यप्रदेश में लागू किया जाएगा, ताकि वर्ष 2030 तक एनएमआर को सिंगल डिजिट में लाने के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। कार्यशाला का आयोजन इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च और संकल्प टीम के सहयोग से किया गया।

नीति आयोग के सदस्य (स्वास्थ्य) डॉ. वी.के. पॉल, आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से वर्कशॉप में शामिल हुए। मिशन निदेशक, एनएचएम, मध्यप्रदेश, डॉ. सलोनी सिडाना, संकल्प परियोजना के प्रमुख सदस्य डॉ. रमेश अग्रवाल (प्रमुख अन्वेषक एवं प्रमुख, नियोनेटोलॉजी विभाग, एम्स दिल्ली), डॉ. दीपक चावला, डॉ. योगेश जैन, डॉ. आशु ग्रोवर, डॉ. आमलिन शुक्ला और आईसीएमआर के वैज्ञानिक, क्षेत्रीय और जिला स्तरीय स्वास्थ्य अधिकारी, एमजीएम मेडिकल कॉलेज, इंदौर और जीएमसी खंडवा के बाल रोग एवं स्त्री रोग विभाग के चिकित्सकीय संकाय तथा खरगोन जिले एवं ब्लॉक के अधिकारी वर्कशॉप में उपस्थित रहे।

हर्बल गार्डन विकसित करें - आयुष मंत्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में सोमवार को मंत्रालय स्थित सभाकक्ष में शासकीय स्वशासी आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय जबलपुर की साधारण सभा की बैठक हुई। मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालयीन गतिविधियों की समीक्षा की। विद्यार्थियों के हितों से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। श्री परमार ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के समग्र विकास, बेहतर अध्ययन–अध्यापन, शैक्षणिक एवं अकादमिक गुणवत्ता सुधार हेतु आवश्यक क्रियान्वयन कर, संस्थान की उत्तरोत्तर उत्कृष्टता के लिए कार्य करने के दिशा निर्देश दिए। आयुष मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालय के मास्टर प्लान एवं फार्मेसी, महिला छात्रावास का निर्माण, पंचकर्म सुखायु केंद्र एवं महाविद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ करने सहित विभिन्न बिंदुओं पर व्यापक चर्चा की । मंत्री श्री परमार ने महाविद्यालय में पदस्थ व्याख्याताओं एवं अधिकारियों के समयमान–वेतनमान संबंधी प्रक्रिया एवं इसके उपरांत उच्च पद प्रभार प्रक्रिया का भी नियत समयावधि पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने महाविद्यालय में नवचयनित व्याख्याताओं की नियुक्ति की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। श्री परमार ने व्यापक कार्ययोजना बनाकर, संस्थागत औषधि निर्माण शाला के सृजन के भाव के साथ, विलुप्त हो रही प्रजातियों के औषधीय पौधों सहित विभिन्न औषधीय पौधों से समृद्ध, हर्बल गार्डन विकसित करने को कहा। श्री परमार ने व्यापक आर्किटेक्चरल प्लान बनाने के भी निर्देश दिए।

भारत को विकसित देश बनाने के लिए परमाणु उर्जा आवश्यक है-परमाणु

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। परमाणु वैज्ञानिक एवं प्रमुख, परमाणु नियंत्रण और योजना विंग, परमाणु उर्जा विभाग डॉ. अरुण कुमार नायक ने कहा कि भारत को विकसित देश बनाने के लिए परमाणु उर्जा आवश्यक है।

आने वाले समय में वह देश ही विकास कर पाएंगे जिनके पास उर्जा के स्त्रोत होंगे। वैज्ञानिक श्री नायक 11 वें भोपाल विज्ञान मेले के समापन सत्र में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व में प्रमुख अर्थव्यवस्था 2047 तक बनने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अत्यंत आवश्यक है बिना इसके विकास संभव नहीं है। बढ़ती जनसंख्या के कारण संसाधनों एवं उर्जा की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि परमाणु उर्जा ही हमारी उर्जा आवश्यकताओं की

पूर्ति कर सकती है। परमाणु वैज्ञानिक डॉ. नायक ने कहा कि परमाणु उर्जा सुरक्षित है एवं इसमें विकिरण को लेकर बहुत ही भ्रांतियां है। उन्होंने आह्वान किया कि देश में निर्मित वस्तुओं का ही उपयोग करें जिससे देश की इकोनामी मजबूत होने में मदद मिलेगी।

परमाणु वैज्ञानिक डॉ. नायक ने परमाणु ऊर्जा के महत्व को विस्तार से बताया कि कैसे यह ऊर्जा भारत को आत्मनिर्भर और स्वच्छ ऊर्जा स्त्रोतों की दिशा में अग्रसर कर सकती है। डॉ. नायक ने इस बात पर जोर दिया कि ऊर्जा संसाधनों का उचित उपयोग करके भारत आने वाले 25 वर्षों में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बन सकता है। उन्होंने छात्रों को परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में शोध और नवाचार के लिए प्रेरित किया।

अखिल भारतीय संगठन सचिव विज्ञान भारती डॉ. शिव कुमार शर्मा ने इस अवसर पर छात्रों से आह्वान किया कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए और वैज्ञानिक सोच रखने के लिए एक विजन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि छात्रों की वैज्ञानिक जिज्ञासाओं का समाधान शिक्षकों द्वारा आवश्यक है क्योंकि पार्थ जैसा विद्यार्थी और कृष्ण जैसा गुरु जीवन को वैज्ञानिक सार्थकता और सफलता प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक रखें और अपने लक्ष्य के प्रति निरंतर मेहनत करते रहें तो हम समाज की सभी बुराइयों को दूर कर सकते हैं।

सशक्त आत्मनिर्भर महिला एवं आत्मनिर्भर आंगनवाड़ी बनाने की अनूठी पहल का प्रथम बैच का समापन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महिला एवं बाल विकास विभाग की संभागीय संयुक्त संचालक श्रीमती नकी जहां कुरैशी के मार्गदर्शन एवं श्री सुनील सोलंकी जिला कार्यक्रम अधिकारी भोपाल के सक्रिय सहयोग से भोपाल जिले के बाणगंगा परियोजना में आंगनबाड़ी क्षेत्र के सर्वे की महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने की पहल बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अंतर्गत शासकीय संस्था क्क्षष्टष्टस्र प्रियांशी एजुकेशन एंड कल्चर सोशल सोसायटी की प्रमुख डॉ. शालिनी सक्सेना एवं ड्ढश्वश्वस्र संस्था वूमेन एजुकेशन एंपावरमेंट सोसाइटी की प्रमुख श्रीमती रखशां शमीम जाहिद, अध्यक्ष बेगम्स ऑफ भोपाल क्लब के सहयोग से नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बैच के समापन में श्री सुरेश तोमर, संयुक्त संचालक, संचालनालय महिला एवं बाल विकास के मुख्य आतिथ्य में संपन्न किया गया जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदाय किया गया।

अभियान के समन्वयक श्री अखिलेश चंद्र चतुर्वेदी परियोजना अधिकारी बाणगंगा द्वारा बताया गया कि भीम नगर आंगनबाड़ी केंद्र परिसर में सोलर पैनल तकनीकी का निन्शुल्क प्रशिक्षण क्क्षष्टष्टस्र संस्था के सहयोग से 25 महिलाओं एवं किशोरी बालिकाओं को 3 महीने तक प्रदाय किया जा रहा है जिसमें उनको सोलर पैनल की तकनीक से संबंधित जानकारी तथा विभिन्न प्रकार के सोलर पैनल, पावर जेनरेशन, वोल्टेज की समझ,इंस्टॉलेशन एवं मरम्मत संबंधी व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं 15 दिवसीय इंटर्नशिप भी करवाया जा रहा है जिससे महिलाओं को प्रशिक्षण उपरांत सीधे रोजगार से जोड़ा जा सके और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

सेक्टर झरनेश्वर के पूर्व एमएलए कॉलोनी की आंगनवाड़ी परिसर में आंगनबाड़ी क्षेत्र की सर्वे की 25 महिलाओं एवं बालिकाओं को इलेक्ट्रिक व्हीकल तकनीकी का नि: शुल्क प्रशिक्षण क्क्षष्टष्टस्र संस्था के सहयोग से किया जा रहा है जिसमें प्रशिक्षार्थियों को इलेक्ट्रिक वाहन की मैकेनिकल तकनीकी, बैटरी की समझ इलेक्ट्रिक वाहन में आने वाली समस्याएं एवं मरम्मत संबंधी प्रशिक्षण विशेषज्ञों के द्वारा प्रदान किया जा रहा है। 3 माह के प्रशिक्षण में 15 दिवसीय इंटर्नशिप शामिल है।प्रशिक्षण के दौरान ही 3 बालिकाओं सुश्री नंदिनी राठौर ,सुश्री प्रियंका यूके एवं सुश्री दीपिका यूके को भोपाल में ही रोजगार वर्कशॉप और आर एन डी मोटर तथा फ्यूमोटिव प्राइवेट लिमिटेड में रोजगार प्राप्त हुआ है।

संस्था के सहयोग से सेक्टर कोलार के जेलबाग आंगनबाड़ी परिसर में जरी जरदोजी, सिलाई –कढ़ाई एवं वित्तीय साक्षरता हेतु 30 –30 के बैच में 10 दिवसीय नि:शुल्क प्रशिक्षण आंगनबाड़ी क्षेत्र के सर्वे की महिलाओं एवं किशोरी बालिकाओं को प्रदाय किया गया है। जिससे इन महिलाओं एवं किशोरी बालिकाओं ने स्वयं से अपना कार्य प्रारंभ कर दिया है एवं वित्तीय समझ के लिए बैंक से समन्वय कर सहायता प्रदान करने का प्रयास संस्था एवं परियोजना कार्यालय द्वारा किया जा रहा है।

पुलिसकर्मियों की ट्रेनिंग

युवक-युवतियों को एक महीने तक कानूनी ज्ञान, कौशल विकास का मार्गदर्शन दिया जाएगा

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली एजेंसी। सिंगरौली जिले में मंगलवार को सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत पुलिसकर्मियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम एसपी ऑफिस में हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य समुदाय आधारित बालिका, महिला सुरक्षा के लिए चल रही विशेष योजना पर और अधिक जानकारी देना था।

युवक-युवतियों को दी जाएगी ट्रेनिंग: बताया गया कि पुलिस थानों के अंतर्गत सृजन समितियां बनाईं गईं हैं। यह समितियां 12 से 20 साल आयु वर्ग की बालिकाओं और बालकों को एक महीने की ट्रेनिंग देकर उन्हें स्वास्थ्य सुरक्षा, कानून का ज्ञान, मानव अधिकारों की समझ और भविष्य निर्माण की योजनाओं सहित उच्च शिक्षा, कौशल विकास के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाएगा।

महिला पुलिसकर्मी ये जिम्मेदारी निभाएंगी: महिला पुलिस कर्मचारियों को पुलिस दीदी के रूप में कार्य करने की जिम्मेदारी दी गई है। ताकि महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा, बाल विवाह, बाल श्रम और जेंडर आधारित हिंसा पर पुलिस से सीधी बात कर पाए।

इनकी रही मौजूदगी: इस दौरान महिला सुरक्षा शाखा प्रभारी अरुण सोनी, नगर पुलिस अधीक्षक पीएस परस्ते, उप निरीक्षक प्रीती साकेत, उप निरीक्षक रूप अग्निहोत्री, महिला थाना प्रभारी प्रियंका शर्मा, उप निरीक्षक शीतल यादव मौजूद रहीं।

आरटीई के तहत अशासकीय शालाओं की मान्यता के लिए समय सारिणी जारी

आवेदन की अंतिम तिथि 23 जनवरी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केन्द्र ने जानकारी देकर बताया है कि निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार समस्त अशासकीय शालाओं द्वारा मान्यता प्राप्त होने के उपरांत ही स्कूल संचालन किया जा सकता है। इसके लिए अधिनियम की मंशा के अनुरूप राज्य सरकार द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2011 के नियम 11 (संशोधित नियम 06 जनवरी 2023) के अनुसार मान्यता के लिए प्रावधान किये गये हैं।

अशासकीय संस्थाओं/शालाओं के संचालक द्वारा स्वयं आरटीई एमपी मोबाइल एप का उपयोग करते हुए मान्यता नवीनीकरण/नवीन मान्यता के लिए आवेदन किया जायेगा साथ ही आवेदन करने के लिए अशासकीय शाला भवन, आवश्यक प्रशिक्षित शिक्षकों तथा स्कूल में आवश्यक संसाधनों को जियो टैग फोटो अपलोड करने के साथ ही आरटीई के मान एवं मानकों की पूर्ति किया जाना अनिवार्य है। अशासकीय स्कूल के संचालक द्वारा स्कूल की मान्यता के लिए आवेदन करते समय जानकारी ऑनलाइन दर्ज करने की प्रक्रिया पूर्ण सजगता के साथ सम्पन्न किया जाये।

समय सारिणी: जिलों में संचालित कक्षा 8 तक के समस्त प्रायवेट स्कूलों के नवीन मान्यता/मान्यता नवीनीकरण आवेदन के लिए सत्र 2025-26 में जारी किए जाने वाली मान्यता के लिए समय सारिणी जारी की गई है। अशासकीय स्कूलों द्वारा नवीन मान्यता/मान्यता नवीनीकरण के लिए आरटीई एमपी मोबाइल एप के माध्यम से निर्धारित शुल्क जमा कर ऑनलाइन आवेदन के लिए 23 दिसम्बर 2024 से 23 जनवरी 2025 तक करना है। विकासखण्ड स्त्रोत समन्वयक द्वारा स्कूल का भौतिक सत्यापन कर निरीक्षण रिपार्ट जिला परियोजना समन्वयक को प्रेषित करने के लिए अशासकीय स्कूल द्वारा ऑनलाइन आवेदन करने के 15 कार्य दिवस के अन्दर करना है। जिला परियोजना समन्वयक द्वारा मान्यता आवेदन के प्रकरणों का निराकरण के लिए अन्तिम तिथि 23 फरवरी 2025 एवं बीआरसीसी द्वारा स्पष्ट अभिमत सहित आवेदन अग्रेषित करने के लिए 10 कार्य दिवस के अंदर करना है। कलेक्टर के समक्ष अपील करने के लिए जिला परियोजना समन्वयक द्वारा मान्यता आवेदन निरस्ती दिनांक से 30 दिवस तक संबंधित अशासकीय स्कूल द्वारा करना है। कलेक्टर द्वारा अपीलीय आवेदनों का निराकरण के लिए स्कूल के अपील आवेदन प्राप्ति के 30 दिवस तक करना है एवं आयुक्त/संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र को द्वितीय अपील के लिए कलेक्टर द्वारा पारित निर्णय के 30 दिवस तक करना है।

उन्होंने समस्त अशासकीय विद्यालयों तथा पंजीकृत सोसायटी/ट्रस्ट की ओर उक्त निर्देश तथा सन्दर्भित पत्र की प्रति भेजकर निर्देशित किया है कि वर्णित दिशा निर्देशों का सूक्ष्मता से अवलोकन करें तथा नवीन मान्यता/मान्यता नवीनीकरण का ऑनलाइन आवेदन निर्दिष्ट समय सीमा 23 जनवरी 2025 तक पूर्ण करें।

जिला जेल सीधी में आयोजित हुआ विधिक जागरूकता शिविर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजीव पाण्डेय के द्वारा 31 दिसम्बर को जिला जेल सीधी का निरीक्षण कर विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।

उक्त शिविर में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजीव पाण्डेय द्वारा उपस्थित बंदियों को अपील एवं पेरोल के अधिकार तथा विधिक सहायता योजना की जानकारी दी गई। बंदियों से उनकी समस्या पूछी गई जिसमें उनके द्वारा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था नहीं होना बताया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की पहल से सांसद डॉ राजेश मिश्रा द्वारा जिला जेल सीधी में आरओ (रिवर्स ऑस्मोसिस) एवं बोरिंग की व्यवस्था की जावेगी जिससे बंदियों को शुद्ध पेयजल प्राप्त होगा।

मेले में गई युवती से गैंगरेप, जंगल में घसीटा

दोस्त के साथ घर लौट रही थी, 6 बदमाशों ने मारपीट कर बंधक बनाया

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली में मेले में गई 19 साल की युवती को बंधक बनाकर गैंग रेप हुआ। 6 युवकों ने युवती और उसके दोस्त को रास्ते में बंधक बनाया लिया। फिर लड़की को घसीटकर जंगल में ले गए। यहां दो युवकों ने दुष्कर्म किया। इस मामले में पुलिस ने सभी 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। घटना जियावान थाना क्षेत्र की है।

एसपी मनीष खत्री ने बताया, रविवार को युवती अपने दोस्त के साथ मेले में गई थी। इसके बाद रात में दोनों लौट रहे थे। इस दौरान रास्ता सुनसान था। यहीं 6 लड़कों ने दोनों को घेर लिया। युवती ने पुलिस को बताया कि 4 बदमाशों ने उसके दोस्त से मारपीट की और बंधक बना लिया। बाद में दो लड़कों ने गैंग रेप किया।

सुबह बदहवास हालत में घर लौटी युवती: पीड़िता के पिता ने बताया कि बेटी मेले से शाम 7-8 बजे तक घर लौटने वाली थी। जब वह नहीं लौटी तो परिवार ने उसे आसपास ढूंढने की कोशिश की। सोमवार सुबह करीब 5-6 बजे वह बदहवास हालत में घर लौटी। उसने परिवार को आपबीती बताई।

सोमवार सुबह करीब 11 बजे पीड़िता अपने परिवार के साथ जियावान थाने पहुंची और शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के बाद पुलिस ने उसकी निशानदेही पर सभी 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आगे की जांच की जा रही है।

पुलिस को पीड़िता के दोस्त की तलाश: लड़की जिस दोस्त के साथ में मेला देखने गई थी वह घटना के बाद से गायब है। पुलिस भी उसे तलाश कर रही है। युवक-युवती एक ही गांव के हैं। वहीं, इस मामले में गिरफ्तार आरोपियों को लेकर पुलिस कोई जानकारी साझा नहीं कर रही है। हालांकि सूत्रों से पता चला है कि 4 आरोपी नाबालिग हैं और दो बालिग हैं।

नपा कर्मचारियों के साथ मारपीट

ईंट से हमला करने का प्रयास, सार्वजनिक रोड पर खुदाई करने से मना करने पर हुआ विवाद

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल में नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड-17 में सार्वजनिक रोड की खुदाई की शिकायत पर पहुंचे नगर पालिका कर्मचारियों के साथ लोगों ने मारपीट और गाली-गलौज की। आरोप हैं कि कुछ लोगों ने नपा टीम पर ईंट से हमला करने का प्रयास किया है। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर भी वायरल हो रहा है। नपा कर्मचारियों की शिकायत पर पुलिस ने दो लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

दरअसल, नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड नंबर-17 के बाण-गंगा मेला मैदान के पीछे सार्वजनिक रोड की खुदाई कर नाली का निर्माण हो रहा था, जिससे नपा को काफी नुकसान पहुंच रहा था। जिसकी शिकायत स्थानीय लोगों के द्वारा नगर पालिका के अधिकारियों से की गई। शिकायत मिलने के बाद नगर पालिका आर आई मयंक मिश्रा सहित रामचरण, धर्मेंद्र सोनी फायर वाहन चालक अफजल खान मौके पर पहुंचे और सार्वजनिक रोड की खुदाई करने से लोगों को मना किया। जिससे विवाद के हालात बन गए।

बताया गया कि आरपी तिवारी और अजीत त्रिपाठी नगरपालिका की सार्वजनिक रोड की खुदाई कर नाली का निर्माण कर रहे थे। जिसे लेकर नगर पालिका के कर्मचारियों ने उन्हें मना किया, लेकिन दोनों लोग नगर पालिका कर्मचारियों के साथ गाली गलौज कर ईंट उठाकर कर्मचारियों पर हमला बोल दिया। इसके बाद मौके से नगर पालिका कर्मचारी थाने पहुंचे और थाने में लिखित शिकायत दी।

पुलिस ने मामले पर जांच की। घटना का वीडियो भी नपा कर्मचारियों ने पुलिस के सामने रखा। जिस पर पुलिस ने आर पी तिवारी और अजीत त्रिपाठी पर गाली-गलौज और शासकीय काम में बाधा जैसे कई धाराओं में मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

69 जनकल्याण शिविरों में मिले 657 आवेदन

संबल कार्ड, पेंशन योजना सहित अन्य विभागों के मामले तुरंत निपटाए जा रहे

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर जिले में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत शासकीय जनकल्याणकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाए जाने के लिए शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर लगाए जा रहे हैं। इसके माध्यम से लोगों की समस्याओं का मौके पर ही निराकरण किया जा रहा है। विभिन्न विभागों की योजनाओं का पात्र हितग्राहियों को लाभ भी दिलाया जा रहा है, जिसमें केंद्र एवं राज्य सरकार के 34 हितग्राही मूलक, 11 लक्ष्य आधारित और 63 अन्य सेवाओं को आम नागरिकों तक सहज रूप से पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान के तहत आयोजित किए जा रहे शिविरों में संबल कार्ड, पेंशन योजना के प्रकरण सहित राजस्व व अन्य विभागों से संबंधित आवेदनों का निराकरण किया जा रहा है। विभागीय अधिकारी शिविर में उपस्थित रहकर विभागीय योजनाओं का लोगों को लाभ दिलाने के साथ ही योजनाओं से परिचित भी करा रहे हैं।

मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान के तहत शहरी क्षेत्र में 31 दिसंबर तक लगाए गए शिविरों की संख्या 69 है। इन शिविरों में 657 आवेदन मिले हैं, जिनमें से 452 आवेदन पात्रता अनुसार स्वीकृत किए गए हैं। अस्वीकृत आवेदनों की संख्या 10 है। शेष बचे 195 लंबित आवेदनों पर कार्रवाई की जा रही है।

टीवी जागरूकता कार्यक्रम, कोयला खदान में काम कर रहे कर्मचारी के लिए गए सैंपल

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले में कोयला उत्खनन का काम कर रही कोल इंडिया की मिनी रत्न कंपनी नॉर्दर्न कोल्ड फील्ड में मंगलवार यो टीवी जागरूकता का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम कोयला खदान के अंदर काम कर रहे श्रमिकों और कर्मचारी के बीच किया गया।

कार्यक्रम के समन्वयक अभिषेक शाह ने बताया कि माइंस एरिया होने के कारण यहां पर सभी लोगों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यहां हमेशा मास्क लगाना अत्यंत आवश्यक होता है। माइंस एरिया और डस्ट एरिया में निवास करने वाले लोग टीवी से जल्दी प्रभावित होते हैं। उन्होंने यह बताया कि दो सप्ताह से ज्यादा की खांसी टीवी हो सकती है। रुक-रुक कर बुखार आए वजन घटे साथ ही खांसी के साथ बलगम में खून आए, तो तुरंत उसे स्वास्थ्य केंद्र में बलगम की जांच करानी चाहिए। यह लक्षण टीवी के हो सकते हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि इस जागरूकता कार्यक्रम में अम्लोरी परियोजना के अंतर्गत काम कर रहे 850 कर्मियों की जांच करवाना आवश्यक है। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान जिला छह केंद्र के उपस्थित कर्मचारियों द्वारा स्क्रीनिंग का टीवी के संभावित रोगियों के सैंपल कलेक्शन भी किए गए। कार्यक्रम ड्डाह कंसल्टेंट डॉक्टर दिव्यांशु शुक्ला, जिला कार्यक्रम प्रबंधक अभिषेक शाह और सुहाना रिजवी नोडल अधिकारी परियोजना भी उपस्थित रही।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी 115 आवेदकों की समस्याएं निराकरण के दिए निर्देश

नागेन्द्र जायसवाल को मिली ट्राइसाइकिल

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नागरिकों के समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को जिला पंचायत सभागार में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक जनसुनवाई आयोजित की जाती है। इस बार आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के विभिन्न अंचलों से आए 115 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अनिराकृत आवेदनों के लिये समय-सीमा निर्धारित कर अधिकारियों को समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं।

जनसुनवाई में जनपद पंचायत सीधी के ग्राम पड़खुरी नंबर 2 से आये नागेन्द्र जायसवाल ने अपने आवेदन पत्र के माध्यम से बताया कि लकवा के कारण वह चलने में असक्षम हैं। उन्हें घर में या कहीं भी आने-जाने के लिए सहारे की आवश्यकता पड़ती है। वह अपना काम स्वयं नहीं कर पाते हैं। उन्होने कहा कि यदि उन्हें ट्राई साइकिल एवं वैशाखी प्राप्त हो जाये तो वे अपना कार्य किसी के सहारे के बिना भी स्वयं कर सकेगे और कही भी आने-जाने में कोई परेशानी नहीं होगी। आवेदक की शारीरिक स्थिति को देखते हुए कलेक्टर ने सामाजिक न्याय विभाग द्वारा उन्हें सहायक उपकरण प्रदान कराए। आज समस्या का त्वरित निराकरण होने पर नागेन्द्र जायसवाल खुश और संतुष्ट दिखे।

जनसुनवाई में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

कबड्डी प्रतियोगिता, स्मृति प्रसंग एवं प्रतिमा अनावरण की तैयारी बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। विद्या सदन स्कूल नगवां जवा रीवा के प्रांगण में7 फरवरी से 9 फरवरी 25 तक होने वाले तीन दिवसीय आयोजन की तैयारी बैठक दिनांक 30 दिसंबर 2024 को स्कूल सभागार में आयोजन समिति के संरक्षक डॉ आर एस कंकोरिया की अध्यक्षता में आयोजित की गई बैठक में आयोजक सचिव एवं प्रतिमा स्थापना समिति के संयोजक शिव बालक पांडेय द्वारा आयोजन की जानकारी प्रदान करते हुए श्रीयुत तिवारी जी के पुण्यतिथि 19 जनवरी को याद करते हुए 19 सदस्यीय समिति द्वारा 19 गांव पैदल प्रचार प्रसार हेतु जिम्मेदारियां सौंपी गई जिसका शुभारंभ 5 जनवरी 2025 को ग्राम तिवनी एवं शाहपुर से होगा। पहले क्रम में श्रीयुत तिवारी की कर्म भूमि मनगवां के 19 गांव, दूसरे क्रम में त्यौंथर और तीसरे क्रम में सिरमौर को सुनिश्चित किया गया। बैठक में आमंत्रित कबड्डी टीमों की जानकारी प्रस्तुत करते हुए प्रतिमा के आकार स्थापना स्थल एवं 9 फरवरी को सुबह-सुंदर कांड का पाठ तथा उक्त अवसर पर होने वाले विशाल भंडारा, महाप्रसाद की जानकारी भी प्रस्तुत की गई।

बैठक में शहीद के पिता रामसुमिरन द्विवेदी, बालेंद्र मिश्रा, शारदा द्विवेदी, जगदीश पांडे, दिनेश द्विवेदी, ओंकार द्विवेदी, सुशील तिवारी, धनेंद्र द्विवेदी, मोहम्मद कादिर रामप्रभाव विश्वकर्मा, देवेंद्र मिश्रा श्रीकांत द्विवेदी, दिलीप पाठक धनेंद्रनत्थू पांडेय हर गोपाल सिंह, बृजेंद्र नाथ द्विवेदी, संतोष शुक्ला, शिव गणेश पांडे, राजकुमार सिंह बृजवासी शुक्ला, राम बदन यादव, रामनरेश तिवारी, छोटेलाल कोल, जयदीप सिंह नीरज पांडेय, सुशील तिवारी नीरज द्विवेदी किशोर तिवारी राघवेन्द्र उपाध्याय सहित काफी संख्या में समिति के पदाधिकारी, खेल प्रेमी, स्कूल के शिक्षक एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विचार

कम्युनिस्ट पार्टी में जहां खूबियां हैं, वहीं खामियां भी

वर्ष 2008 से अमरीका में शुरू हुआ आर्थिक संकट यद्यपि दिन-ब-दिन गहराता जा रहा है, जिसने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि पूंजीवादी व्यवस्था मानवता का कल्याण करने में पूर्णतः असमर्थ है। वर्तमान संकट शुरू होने के समय ईसाई धर्म के सर्वोच्च धार्मिक नेता पोप ने कहा था, ''जर्मनी में जन्मे एक महान व्यक्ति कार्ल मार्क्स ने हमें पूंजीवादी व्यवस्था में होने वाले आर्थिक धमाकों के बारे में पहले से ही सचेत कर दिया था परन्तु हम उसकी भविष्यवाणियों की ओर ध्यान नहीं दे सके।'' कार्ल मार्क्स की भविष्यवाणी का सार यह है कि पूंजीवादी व्यवस्था समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने के मामले में विफल रही है जबकि समाजवाद यानी समानताओं वाले समाज में इन कार्यों को पूरा करने की अपरिहार्य संभावनाएं हैं।

भारत में 1947 के बाद से विभिन्न रंगों की सरकारों के प्रदर्शन और आम लोगों की बढ़ती कठिनाइयों को देखते हुए बुद्धिमान नागरिक अक्सर सवाल करते हैं कि क्या व्यावहारिक दृष्टिकोण से पूरी तरह से जनसमर्थक होने के बावजूद वामपंथी विचारधारा अभी भी प्रासंगिक है? वर्तमान समय में कम्युनिस्ट पार्टियां कमजोर क्यों होती जा रही हैं। समाज में संघर्षशील होते हुए भी वे लुटे-पिटे लोगों के बीच अपना प्रभाव एवं जनाधार क्यों नहीं बढ़ा सकीं। बुद्धिमान लोगों का मानना है कि वामपंथी दलों की ताकत कम से कम इतनी तो होनी ही चाहिए, जो उन्हें वर्तमान सरकारों की जनविरोधी नीतियों और समाज को बांटने वाले साम्प्रदायिक विचारों का विरोध करने में सक्षम बना सके।

वामपंथी ताकतों के बारे में कोई संदेह नहीं है। सही सोच रखने वाले लोगों विशेषकर श्रमिकों, किसानों और मेहनतकश लोगों के दिलों में वाम आंदोलन को मजबूत देखने की प्रबल इच्छा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। वामदलों ने अपनी मानवतावादी विचारधारा, स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए गौरवपूर्ण बलिदानों, श्रमिकों, किसानों, भूमिहीन मजदूरों सहित समाज के हर पीड़ित वर्ग की समस्याओं को हल करने और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए जन संघर्षों के रूप में सबसे अधिक योगदान दिया है।

राजनीति को सत्ता का सुख भोगने और भ्रष्टाचार तथा लूटपाट के माध्यम से अकूत धन संचय करने का हथियार मानने वाले राजनेताओं के एकदम विपरीत कम्युनिस्टों के लिए 'राजनीति' जनसेवा का सर्वोत्तम हथियार है, जो पूरे समाज को सभी कठिनाइयों से मुक्ति दिला सकता है।

अमित शाह की रणनीति से नक्सलवाद पर लगाम

उमेश चतुर्वेदी

बीते वक्त में या खोया और या पाया, हर नए साल के साथ इसके मूल्यांकन की परंपरा है। इस लिहाज से अगर बीते हुए यानी साल 2024 का मूल्यांकन करेंगे तो कई बिंदुओं पर हमें निराशा हाथ लगेगी तो कई उपलधियों और कामयाबियों का भी जिक्र होगा। लाल आतंक के रूप में वियात नसलवाद पर नकेल बीते हुए साल की उपलधि कही जा सकती है। इसका श्रेय निश्चित तौर पर गृहमंत्री अमित शाह को जाता है, लेकिन इसमें भूमिका राज्यों की भी कम नहीं रही है। बीते साल सुरक्षा बलों की कार्रवाई में भारी संया में नसली या तो मारे गए हैं या फिर गिरतार किए गए हैं।

इसके साथ ही कई नक्सलियों ने समर्पण करके मुख्यधारा की जिंदगी को अपनाया है। नक्सली आतंक पर कामयाबी के पीछे रही तीन-स्तरीय रणनीति, जिसके तहत सबसे पहले नक्सलियों पर समर्पण का दबाव बनाया गया। अगर इसके बावजूद नक्सली नहीं मानता तो उसकी पहले गिरफ्तारी के लिए रणनीति बनाई गई। इसके बावजूद अगर नक्सलवादी नहीं माने तो उनके खिलाफ निर्णायक मुठभेड़ की तैयारी की गई। इसी का असर रहा कि बीते साल अकेले छत्तीसगढ़ राज्य मे ही करीब एक हजा से ज्यादा नक्सलियों ने या तो आत्मसमर्पण किया या फिर उनकी गिरफ्तारी की गई है, जबकि करीब 287 नक्सली मारे गए। इनमें झारखंड में मारे गए नक्सलियों की संख्या सिर्फ नौ रही, जबकि सबसे ज्यादा नक्सली छत्तीसगढ़ में मारे गए। झारखंड में इसी तरह एक सैक मेम्बर, दो जोनल कमांडर, छह सब जोनल कमांडर और छह एरिया कमांडर गिरफ्तार किए गए। इन सभी नक्सलियों पर 36 लाख का इनाम घोषित था। छत्तीसगढ़ की कमर सबसे ज्यादा उस छत्तीसगढ़ में टूटती नजर आ रही है, जहां नक्सलियों कभी कांग्रेस के तकरीबन समूचे राज्य नेतृत्व को खत्म कर दिया था। छत्तीसगढ़ में करीब 867 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है।

नक्सलवाद के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण नक्सल प्रभावित इलाकों में बुनियादी ढांचे की कमी को माना जाता रहा है। नक्सलवाद का समूल नाश करने के लिए मौजूदा केंद्र सरकार ने सबसे पहले इसी समस्या को खत्म करने पर जोर दिया। इसके तहत केंद्र सरकार ने विकास और बुनियादी ढांचे पर विशेष ध्यान केंद्रित किया । बस्तर समेत तमाम नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के हजारों गांवों को सड़क, बिजली और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं से जोड़ा गया। इन गांवों में बुनियादी सहूलियतों को बहाल किया गया। इसकी वजह से इन इलाकों के स्थानीय निवासियों की जिंदगी की कठिनाइयां कम हुईं। इसकी वजह से उन्होंने विकास की धारा को अपनी आंख से देखा और भारतीय राष्ट्र राज्य के बारे में उनकी धारणा बदली। इस धारणा को बदलने के बाद सुरक्षा बलों के लिए नक्सलियों को रोकने के लक्ष्य में बड़ी सफलता मिली। नक्सलियों को लोक समर्थन कम हुआ।

इसके साथ ही सरकार ने आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए आर्थिक सहायता और पुनर्वास योजनाओं की शुरुआत की। इसके तहत 15,000 आवास बनाने का फैसला लिया गया, साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों में रोजगार को लेकर विशेष योजनाएं चलाई गईं। इससे न केवल हिंसा में कमी आई , बल्कि स्थानीय लोगों की जिंदगी की दुश्वारियां कम हुईं। इसकी वजह से उन लोगों का मन बदला, जो माओवाद की राह पर नक्सलवादी वैचारिक बहकावे में चल पड़े थे। बुनियादी ढांचा सुधारने, रोजगार की स्थितियां बेहतर बनाने और विकास की धारा को बहाने के बावजूद लंबे समय से नक्सल प्रभावित रहे लोगों के लिए मुख्यधारा में लौटना या मुख्यधारा के प्रति भरोसा बनाना बिना सुरक्षा सुनिश्चित किए संभव नहीं था। सरकार ने इस मोर्चे पर भी काम किया और सुरक्षा बलों की प्रभावी उपस्थिति हर संभव स्तर पर की।

नक्सल प्रभावित इलाकों में स्वास्थ्य और शिक्षा सहूलियत को बढ़ावा देने के लिए युद्धस्तर पर कार्यक्रम चलाए गए। पहले इन इलाकों के लिए स्कूल और अस्पताल सपना थे, लेकिन अब हालात बदल रहे है। इसके साथ ही, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों की स्थापना भी की गई है। जहां आदिवासी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है। इससे भी नक्सल प्रभावित इलाकों के लोगों का मन बदला है। स्थानीय समुदायों का सहयोग इस अभियान की सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। अमित शाह ने प्रभावित क्षेत्रों में जनता से सीधे संवाद स्थापित किया है। ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया है, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है। स्थानीय सुरक्षा बलों को मजबूत करते हुए उनकी मदद से नक्सलवाद को कमजोर किया गया है। इन प्रयासों ने न केवल जनता का विश्वास जीता है, बल्कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति और स्थिरता लाने में भी मदद की है।

इस बीच नक्सलियों पर गहन निगाह रखने के लिए जहां खुफिया तंत्र को मजबूत बनाया गया, वहीं उनकी निगाहबानी के लिए तकनीक का भी खूब सहारा लिया जा रहा है।

ड्रोन जैसी तमाम तकनीकों के जरिए जहां माओवादियों की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है, वहीं सटीक सूचनाओं के चलते उनके खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करने में भी आसानी हुई है। इसके साथ ही नक्सलियों के लिए की जा रही परोक्ष और अप्रत्यक्ष फंडिंग पर नकेल कसी गई है। हालांकि सरकार के इस कदम को लेकर राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना झेलनी पड़ी है। लेकिन केंद्र सरकार ने अपना रूख नहीं बदला। इससे नक्सलियों की आर्थिक रीढ़ कमजोर हुई है।

गृहमंत्री अमित शाह ने 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद से मुक्त करने का लक्ष्य रखा है। नक्सलवाद पर नकेल कितना कारगर रहा है, इसका ही असर है कि देश के अब सिर्फ 38 जिले ही नक्सल प्रभावित माने जा रहे हैं, जबकि पहले ऐसे जिलों की संख्या 120 से अधिक थी। नक्सलवाद से जुड़े सिमटते आंकड़े ही बता रहे हैं कि केंद्र सरकार की नक्सलविरोधी रणनीति की दिशा सही है।

सरकार ने आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के पुनर्वास के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 15,000 से अधिक आवास बनाए जा रहे हैं। जिनमें विस्थापित परिवारों को रहने की सुविधा दी जा रही है।

नक्सलवाद से विस्थापित परिवारों के लिए राहत शिविर भी बनाए गए हैं। समर्पण कर चुके नक्सलियों और नक्सल प्रभावित इलाके के के लोगों को रोजगार दिलाने के लिए कौशल विकास केंद्रों की स्थापना की गई है, जहां आत्मसमर्पण करने चुके नक्सलियों को उनकी रूचि वाले कारोबार और व्यवसाय के प्रशिक्षित किया जाता है। साथ ही रोजगार मेले भी आयोजित किए जाते रहे। जिनके जरिए सरकारी और निजी, दोनों ही क्षेत्रों में रोजगार मुहैया कराया जा रहा है।

आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को आर्थिक सहायता के साथ ही बैंकों से कर्ज भी आसान दर पर दिलवाया जा रहा है। केंद्र सरकार की इन योजनाओं को लागू करने में सरकार ने श्रीलंका और कोलंबिया जैसे देशों में अपनाई गई पुनर्वास नीतियों का भी असर है। दरअसल वहां की योजनाओं के अध्ययन के बाद उन्हें भारतीय संदर्भ में तैयार किया गया है। अब तक आदिवासियों से केंद्रीय नेतृत्व बात करने से बचता रहा है। लेकिन अमित शाह ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों के साथ संवाद स्थापित करने पर जोर दिया है। इसकी शुरूआत उन्होंने छत्तीसगढ़ में महुआ के पेड़ के नीचे चौपाल लगाकर की, जहां उन्होंने खुद ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और उन्हें सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक किया।

खेल जगत के लिए ऐतिहासिक और प्रेरणादायक रहा 2024

योगेश कुमार गोयल

2024 का वर्ष खेल जगत के लिए कई मायनों में अद्वितीय, ऐतिहासिक और प्रेरणादायक रहा। यह वर्ष न केवल नई उपलब्धियों और नए रिकॉर्ड का गवाह बना बल्कि कई युवा खिलाड़ियों के उदय के अलावा खेल में नई तकनीकों के समावेश का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। खेल संस्कृति में बदलाव और तकनीकी उन्नति के कारण खेलों के अनुभव को नई ऊंचाईयां मिली। वर्ष 2024 भारतीय खेलों में क्रिकेट, ओलंपिक, पैरालंपिक, शतरंज ओलंपियाड और फिडे विश्व चैंपियनशिप में सफलता के लिए याद किया जाएगा। भारतीय एथलीटों ने इस वर्ष विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया। वॉलीबॉल और टेबल टेनिस जैसे खेलों में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। क्रिकेट से लेकर टेनिस, हॉकी, शतरंज के अलावा भारत ने पेरिस ओलंपिक और पैरालंपिक में भी अपना लोहा मनवाया। भारत का इन खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन रहा, जिससे समस्त देशवासी गौरवान्वित हुए। भारत में आयोजित एशियाई खेल और विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप ने वैश्विक स्तर पर भारत को एक प्रभावशाली खेल मेजबान के रूप में स्थापित किया। एक क्रिकेट विश्व कप, 6 ओलंपिक पदक, 29 पैरालंपिक पदक और दो शतरंज विश्व चैंपियनशिप सहित 2024 ने भारतीय खेल प्रशंसकों को जश्न मनाने के कई ऐसे अवसर प्रदान किए, जिससे खेलों की दुनिया में भारत का भविष्य उज्जवल नजर आता है।

2024 में खेलों में तकनीकी उन्नति ने निर्णायक भूमिका निभाई। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और वर्चुअल रियलिटी ने खिलाड़ियों के प्रशिक्षण और प्रदर्शन विश्लेषण को नई दिशा प्रदान की। इसके अलावा दर्शकों के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एआर (ऑगमेंटेड रियलिटी) तकनीक का उपयोग किया गया। विश्वनाथन आनंद के बाद इस वर्ष शतरंज के नए चैंपियन उभरकर दुनिया के सामने आए और शतरंज ने खेल प्रेमियों को जश्न मनाने का भरपूर मौका दिया। हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में 45वें चेस ओलंपियाड का आयोजन हुआ था, जिसमें पुरुष वर्ग में 195 देशों की 197 टीमों और महिला वर्ग में 181 देशों की 183 टीमों ने हिस्सा लिया था। भारत की पुरुष और महिला दोनों ही टीमों ने सितंबर में इस ओलंपियाड में पहली बार स्वर्ण पदक जीते, वहीं डी गुकेश और कोनेरू हम्पी ने दिसंबर में विश्व खिताब के साथ नई ऊंचाईयों को छुआ। 12 दिसंबर को सिंगापुर में आयोजित विश्व शतरंज चैंपियनशिप में गुकेश ने महज 18 वर्ष की आयु में पिछली बार के शतरंज चैंपियन चीन के डिंग लिरेन को हराकर सबसे कम उम्र के विश्व चैंपियन बनकर नया इतिहास रचा। वह विश्वनाथन आनंद के बाद वैश्विक खिताब जीतने वाले दूसरे भारतीय बने, वहीं 37 वर्षीया हम्पी ने 28 दिसंबर को अपने कैरियर में दूसरी बार महिलाओं का रैपिड विश्व खिताब जीता।

पिछले साल भारत वनडे विश्व कप 2023 का खिताब जीतने से चूक गया था लेकिन इस वर्ष आईसीसी ट्रॉफी जीतने का 11 वर्ष का सूखा समाप्त करने में भारत सफल हुआ। आखिरी बार महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में भारत ने 2013 में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी अपने नाम की थी। रोहित शर्मा की कप्तानी में 30 जून 2024 को भारतीय टीम ने बारबाडोस में दक्षिण अफ्रीका को मात देकर

टी20 विश्व कप का खिताब जीता। इसी प्रकार भारतीय हॉकी टीम ने पांचवीं बार एशियन चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता। भारत की ओर से जुगराज सिंह ने गोल दागा था, जिसकी बदौलत भारतीय टीम ने चीन को 1-0 से मात देते हुए यह खिताब अपने नाम किया। टेनिस में रोहन बोपन्ना ने ऑस्ट्रेलियन ओपन 2024 में इटली के सिमोन बोलेली और वावसोरी को मात देकर मेंस डबल्स का खिताब जीता और ग्रैंड स्लैम जीतने वाले सबसे उम्रदराज पुरुष खिलाड़ी बने। उन्होंने 43 वर्ष की उम्र में यह खिताब अपने नाम किया। जहां तक ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत के प्रदर्शन की बात है तो पूरी उम्मीद थी कि भारत इस वर्ष पेरिस में ओलंपिक में नया इतिहास लिखेगा लेकिन 206 देशों के बीच भारत 71वें स्थान पर रहा और भारत का अभियान 1 रजत और 5 कांस्य सहित कुल 6 पदकों के साथ समाप्त हो गया जबकि टोक्यो ओलंपिक में 1 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य सहित 7 पदक जीतने में सफल हुआ था। महिला पहलवान विनेश फोगाट का 100 ग्राम वजन अधिक होने का मामला भारत की पदक उम्मीदों पर सबसे ज्यादा भारी पड़ा था क्योंकि उनके स्वर्ण पदक जीतने की उम्मीदें लगभग पक्की हो चुकी थी। पेरिस ओलंपिक में भारत भले ही टोक्यो ओलंपिक के रिकॉर्ड को नहीं तोड़ सका लेकिन पुरुष हॉकी टीम का लगातार दूसरी बार पदक जीतना भारत के बेहद महत्वपूर्ण रहा।

निशानेबाज मनु भाकर ने तो एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतकर सनसनी मचा दी। वह एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट बनी। टोक्यो ओलंपिक के गोल्डन ब्वॉय नीरज चोपड़ा से स्वर्ण पदक जीतने की सबसे ज्यादा उम्मीदें थी लेकिन वह रजत पदक ही हासिल कर सके। उनके अलावा शूटिंग में सरबजोत सिंह, स्वप्निल कुसाले, कुश्ती में अमन सहरावत और पुरूष हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में पदक जीते।

पेरिस ओलंपिक के बाद पैरालंपिक खेलों का महाकुंभ तो भारत के लिए अविस्मरणीय बन गया। दरअसल पहली बार हमारे पैरा खिलाड़ी कीर्तिमानों, उपलब्धियों और पदकों का अभूतपूर्व अध्याय रचने में सफल हुए। दिव्यांग होने के बावजूद उन्होंने दिव्यता के साथ जो सफलताएं अर्जित की, वह तमाम लोगों के लिए मिसाल बनी। पेरिस पैरालंपिक में भारत ने 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य पदक सहित कुल 29 पदक जीते और पदक तालिका में भारत 18वें स्थान पर रहा।

पुलिस-राजस्व के बीच विवाद फिर गरमाया

तहसीलदार का भाई बोला- तीन दिन में मांगी थी रिपोर्ट, 39 दिन बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में नायब तहसीलदार की पिटाई कांड के बाद पुलिस और राजस्व विभाग का विवाद एक बार फिर से सुलगने लगा है। सोमवार को बस्तर जिले के करपावंड के नायब तहसीलदार के भाई बयान देने एएसपी ऑफिस पहुंचे, तब उन्होंने पुलिस अफसरों की भूमिका पर सवाल उठाते हुए जांच में लीपापोती करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि, आईजी और एसपी ने तीन दिन के भीतर केस की जांच कराने की बात कही थी। लेकिन, 39 दिन बाद भी अब तक जांच नहीं की गई है और न ही उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर को खत्म करने की कार्रवाई की जा रही है।

दरअसल, सरकंडा के अशोक नगर में निवासी पुष्पराज मिश्रा करपावंड में नायब तहसीलदार हैं। 17 नवंबर की देर रात वो अपने इंजीनियर भाई पुष्पेंद्र मिश्रा और पिता के साथ रेलवे स्टेशन से लौट रहे थे। तभी दो पुलिसकर्मियों ने उन्हें अशोक नगर स्थित डीएलएस कॉलेज के पास रोक लिया। इस दौरान तहसीलदार के परिचय देने के बाद भी जवानों ने दुर्व्यवहार किया, जिसके बाद थाना प्रभारी को इसकी जानकारी दी। तत्कालीन थाना प्रभारी तोपसिंह नवरंग ने उन्हें थाने बुलवा लिया। इस दौरान थाने में सीएसपी सिद्धार्थ बघेल की मौजूदगी में उनके साथ धक्कामुक्की करते हुए दुर्व्यवहार किया गया। जब कलेक्टर अवनीश शरण से बात कराई, तब उल्टा सरकारी काम में बाधा का केस दर्ज कर लिया। साथ ही आरोप लगाया गया कि नायब तहसीलदार शराब के नशे में था।

नायब तहसीलदार को अपराधी की तरह थाने ले गए: नायब तहसीलदार पुष्पराज मिश्रा अपनी मां की तबीयत खराब होने की जानकारी मिलने के बाद देर रात बिलासपुर पहुंचे थे। अशोक नगर के पास पुलिस की गश्त टीम ने उन्हें रोकने की कोशिश की। पुष्पराज ने कुछ दूरी पर जाकर अपनी गाड़ी रोकी। इसके बाद विवाद उपजा और पुलिस वाले उन्हें अपराधी की तरह पकड़कर थाने ले आए।

आरोप है कि थाना प्रभारी तोप सिंह नवरंग ने थाने में नायब तहसीलदार पुष्पेंद्र मिश्रा के साथ बदसलूकी की। मुलाहिजा के लिए ले जाते समय धक्के देकर गाड़ी में बिठाया गया।

कलेक्टर के हस्तक्षेप के बाद भी थानेदार ने कर दी एफआईआर: इस विवाद के दौरान नायब तहसीलदार के इंजीनियर भाई ने देर रात कलेक्टर अवनीश शरण को फोन लगाया। इस दौरान उन्होंने थानेदार से भी बात कराई। कलेक्टर के हस्तक्षेप करने के बाद भी तत्कालीन थाना प्रभारी तोप सिंह ने मामले को गंभीरता से नहीं लिया। नायब तहसीलदार और उसके भाई के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

बवाल मचा, तब एसपी-आईजी ने दिए जांच के आदेश: इस घटना के दूसरे दिन नायब तहसीलदार के साथ हुए दुर्व्यवहार को लेकर छत्तीसगढ़ कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा संघ सहित राजस्व अफसरों ने पुलिस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। बवाल मचने पर एसपी रजनेश सिंह और आईजी डॉ. संजीव शुक्ला ने तीन दिन के भीतर एडिशनल एसपी से जांच कराने और रिपोर्ट मांगने का भरोसा दिलाया।

इसके साथ ही कलेक्टर अवनीश शरण और एसपी रजनेश सिंह ने कहा कि, विवाद का पटाक्षेप हो गया है। तहसीलदार के खिलाफ दर्ज केस को भी खत्म करने का भरोसा दिलाया गया।

टीआई ने पीटा, जेब में हाथ डालकर खड़े रहे सीएसपी: सरकंडा थाने में टीआई तोप सिंह ने नायब तहसीलदार पुष्पराज मिश्रा से मारपीट की थी। ये घटना थाना परिसर में लगे सीसीटीवी में कैद हो गई थी जो सोशल मीडिया पर वायरल भी हो रहा था। दोनों के बीच विवाद का ऑडियो भी सामने आया था, जिसमें टीआई नवरंग ने बोला था कि ईगो हर्ट हो गया, रूक थाने आता हूं। वहीं, थाने के वीडियो में टीआई नवरंग नायब तहसीलदार के साथ धक्कामुक्की और मारपीट करते भी दिख रहा है। इस दौरान सीएसपी सिद्धार्थ बघेल भी मौजूद थे, जो जेब में हाथ डालकर खड़े दिख रहे हैं।

भाई बोला- पुलिस प्रशासन का नहीं मिल रहा सहयोग: नायब तहसीलदार पुष्पराज मिश्रा के इंजीनियर भाई पुष्पेंद्र मिश्रा का आरोप है कि, इस घटना के बाद अफसरों की समझाइश और आश्वासन पर वो शांत हो गए थे। लेकिन, घटना के 39 दिन बाद भी अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। कार्रवाई के नाम पर केवल टीआई को थाने से हटाया गया है। पूरे मामले में तीन दिन के भीतर जांच? पूरी करने की बात कही गई थी, जो नहीं हुई।

थाने में लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज तक पेश नहीं किए। सूचना के अधिकार में भी उन्हें जानकारी नहीं दी जा रही है। प्रारंभिक जांच की न तो रिपोर्ट दर्ज की है और न ही उनके खिलाफ दर्ज केस वापस लेने पर कोई फैसला लिया गया है। ऐसे में पुलिस अफसरों की कार्यप्रणाली संदेहास्पद है।

एसपी बोले- चल रही है विभागीय जांच: एसपी रजनेश सिंह ने कहा कि, इस मामले की प्रारंभिक जांच हो चुकी है। जिसमें टीआई को आरोप पत्र जारी कर विभागीय जांच शुरू की गई है। विभागीय जांच की प्रक्रिया थोड़ी लंबी है। एफआईआर पर खात्मा कोर्ट की प्रक्रिया है। इस मामले की निष्पक्ष जांच की जा रही है।

नायब तहसीलदार और उनके परिवार को पुलिस पर भरोसा रखना चाहिए। उनके साथ अन्याय नहीं होगा। केस में जो भी दोषी होगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

7 साल बाद भी अमृत मिशन योजना अधूरी

बिलासपुर समेत छत्तीसगढ़ के किसी भी शहर में 24 घंटे नहीं हो रही पानी सप्लाई

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में 24 घंटे पानी सप्लाई के खास मकसद से शुरू की गई 'अमृत मिशन' योजना 7 साल बाद भी अधूरी है। ट्यूबवेल से सप्लाई बंद कर सरफेस वाटर यानी नदी, बांध के पानी की सप्लाई की जानी थी। जिससे भूगर्भ जल को बचाया जा सके। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, भिलाई और कोरबा शहर की जल योजना अब भी ट्यूबवेल के सहारे चल रही है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, छत्तीसगढ़ के पांचों शहरों में ट्यूबवेल पर निर्भरता समाप्त नहीं हो पाई है। न्यायधानी बिलासपुर में सबसे बड़ी 22.50 लाख लीटर क्षमता की कुदुदंड पानी टंकी से बांध की जगह ट्यूबवेल से सप्लाई की जा रही है।

नोडल अधिकारी अनुपम तिवारी का कहना है कि, अमृत मिशन की पाइप लाइन के ज्वाइंट की लीकेज अब तक दुरुस्त नहीं हो पाई है। इसका ट्रायल होने के बाद ट्यूबवेल बंद कर दिया जाएगा।

योजना लक्ष्य से कोसों दूर: अमृत मिशन योजना के तहत पानी की बचत के लिए 24 घंटे पानी सप्लाई, मीटरिंग प्रणाली ताकि लोग जरूरत के हिसाब से पेयजल का उपयोग करें। ट्यूबवेल पर निर्भरता समाप्त करने के लिए बिलासपुर में खूंटाघाट बांध से ग्रेविट फोर्स के जरिए सप्लाई की जा रही है, लेकिन 22 में से एक कुदुदंड पानी टंकी में बांध की बजाय ट्यूबवेल के पानी से सप्लाई की जा रही है।

मीटरिंग के लिए प्लान करेंगे- कमिश्नर: नगर निगम कमिश्नर अमित कुमार का कहना है कि, ट्यूबवेल बंद करने का सिलसिला शुरू हो गया है। अब तक 50 फीसदी यानी 66 ट्यूबवेल बंद किए जा चुके हैं। अभी ट्यूबवेल का इस्तेमाल केवल सप्लाई के वक्त बूस्टर के रूप में किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि बिलासपुर में मीटरिंग प्रणाली लागू करने के लिए प्लानिंग की जाएगी, जिससे लोग मीटर के हिसाब से जरूरत के मुताबिक पानी उपयोग करें। ऐसा करने से पानी की बचत का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

ट्रक ने 13 को कुचला, 2 बच्चों की मौत

अमरकंटक से धमतरी लौट रहे थे श्रद्धालु, गाड़ी खराब होने पर सड़क किनारे बैठे थे

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायपुर में ट्रक ने सड़क किनारे खड़े 13 श्रद्धालुओं को कुचल दिया, जिससे 2 बच्चों की मौत हो गई। हादसे में 11 लोग घायल हो गए हैं। इनमें से 3 लोगों की हालत गंभीर है। बताया जा रहा है कि, सिलतरा के पास गाड़ी खराब होने पर रिपेयरिंग करा रहे थे। मामला धरसींवा थाना क्षेत्र के सिलतरा चौकी का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मरने वालों में 2 बच्चे हैं, जिनका नाम आरध्य साहू (12) और मोनिका साहू (14) है। दोनों बच्चे ट्रक के टायर के नीचे बुरी तरह कुचला गए, जिससे दोनों की मौके पर मौत हो गई। वहीं घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अमरकंटक दर्शन करने गया था परिवार: बताया जा रहा है कि हादसा सोमवार रात करीब 1:30 बजे हुआ है। धमतरी जिले का साहू परिवार नए साल से पहले अमरकंटक दर्शन करने गया था। रात में अमरकंटक से धमतरी लौट रहे थे। तूफान गाड़ी में महिलाओं और बच्चों को मिलाकर 13 लोग सवार थे।

इस दौरान सिलतरा ओवर ब्रिज के ऊपर गाड़ी में खराबी आ गई, तभी पीछे से तेज रफ्तार में रायपुर की तरफ आ रहे ट्रक ने गाड़ी और लोगों को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के वक्त कुछ लोग सड़क किनारे और कुछ लोग गाड़ी के अंदर बैठे थे।

हादसे में ये लोग घायल हुए: पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक घायलों में लिना साहू, मोनिका साहू, माही साहू, निर्मल साहू, निशा साहू, प्रार्थना साहू, ओम प्रकाश साहू, गीतांजली साहू, प्रेरणा साहू, दीक्षा साहू, कृतेश साहू और ड्राइवर नरोत्तम साहू शामिल हैं।

हादसे में कुछ लोगों के सिर और कुछ लोगों के पैरों पर गंभीर चोटें आई हैं। परिवार के लोगों को एंबुलेंस के माध्यम से अस्पताल पहुंचाया गया।

हेडलाइट जलाने के बाद भी कुचला: सिलतरा चौकी प्रभारी बालेश्वर लहर ने बताया कि दर्शनार्थियों की गाड़ी खराब हो गई थी। रिपेयरिंग के दौरान तूफान गाड़ी के ड्राइवर ने एहतियात बरतने के लिए पार्किंग लाइट और हेडलाइट भी जला रखी थी। इसके बावजूद ट्रक ने सभी को कुचला।

चौकी प्रभारी प्रभारी ने बताया कि बच्चों के शवों को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया जाएगा है। वहीं आरोपी ट्रक ड्राइवर को हिरासत में ले लिया गया है। आरोपी के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस आगे की जांच में जुटी हुई है।

चोरी और लावारिस पड़े 72 गाड़ियां बरामद, 6 चोर भी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में चोरी हुईं और लावारिस हालत की 72 गाड़ियां बरामद हुई है। पुलिस ने इस मामले में 6 चोरों को भी गिरफ्तार किया है। जो गाड़ियों को चोरी कर ओडिशा में बेच देते थे। इसमें से करीब 45 गाड़ी शहर भर के कई पार्किंग में लावारिश हालत में पुलिस को खड़ी मिली थी। मामला आजाद चौक थाना क्षेत्र का है। इस मामले में रायपुर एसएसपी डॉ. लाल उम्मेद सिंह से मिली जानकारी के मुताबिक, आजाद चौक पुलिस को ईदगाह भाठा के पास कुछ लड़के दो-तीन गाड़ियों को बेचने की फिराक में घूमते दिखे। पुलिस ने सूचना मिलने पर संदिग्धों से पूछताछ की। आरोपी रोशन नडार, नीरज नायक, लकेश टांडेकर, जनक टांडी, अभिषेक पटेल और विक्की टांडेकर नाम बताया। आरोपियों से कड़ाई से पूछताछ करने पर पता चला इनके पास जो गाड़ियां वह चोरी की है।

जनदर्शन में आए 28 आवेदन

आम नागरिकों से मिलने वाले आवेदनों का निराकरण समय-सीमा पर करें : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं को सीधे कलेक्टर के समक्ष रखा। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। जनदर्शन में आज कुल 28 आवेदन प्राप्त हुए।

आज के जनदर्शन में आवेदक किशोर कुमार केशरवानी निवासी चिरमिरी सी.सी रोड चौड़ीकरण निर्माण को बढ़ाने के संबंध में, रविकांत गुप्ता निवासी बैकुंठपुर लंबित राशि का भुगतान कराने के संबंध में, दयावती निवासी महाई विधुवा पेंशन के संबंध में, रूपा जयसवाल निवासी भगवानपुर पानी टंकी सुधारने के संबंध में, सुदर्शन निवासी रेद आदेश का पालन नही किये जाने के संबंध में, शिव प्रसाद निवासी मुख्तियारपारा भूमि के संबंध में, सुमित्रा निवासी कठौतिया महिला समूह के ऋण राशि जमा में गड़बड़ी करने के संबंध में, कमल देव निवासी चिरमिरी अवैध मादक पदार्थो की बिक्री पर रोक एवं कार्यवाही करने के संबंध में, समस्त मोहल्लावासी निवासी मनेंद्रगढ़ चबूतरा निर्माण कर किये गये अतिक्रमण को हटाये जाने के संबंध में, समस्त मोहल्लावासी निवासी मनेंद्रगढ़ सार्वजनिक चिल्ड्रेन पार्क का निर्माण किये जाने के संबंध में, खोनेश्वर प्रसाद निवासी झगराखाण्ड पार्षद निधि से यथा शीघ्र कराये जाने के संबंध में, अभय बड़ा निवासी मनेंद्रगढ़ पाइप लाइन के ऊपर लोहे का विद्युत पोल गाड़ने के संबंध में, अभय बड़ा निवासी मनेंद्रगढ़ पानी पाइप लाइन की मरम्मत के संबंध में, संध्या यादव निवासी खड़गवां कलेक्टर दर से वेतन प्रदाय कराने के संबंध में, सोनसाय निवासी भलौर प्रार्थी का धान विक्रय लिस्ट में नाम जोड़ने के संबंध में, बाबूलाल निवासी खोंगापानी भूमि के संबंध में, सुखरनिया निवासी मोहनटोला भूमि के संबंध में, अमित कुमार राय निवासी नागपुर नक्शा सुधार किये जाने के संबंध में, कृष्ण कुमार निवासी हर्रिटोला नलकूप खनन के संबंध में, विशेष सोनी निवासी मनेंद्रगढ़ बिजली कटौती की समय सारणी को बदलने के संबंध में, हरिकृष्ण रवि निवासी उजियारपुर मरम्मत निर्माण कार्य की भुगतान कराने के संबंध में, हरिकृष्ण रवि निवासी उजियारपुर शौचालय का भुगतान करने के संबंध में, रुकमणी, राजिया निवासी कठौतिया ऋण राशि जमा में गड़बड़ी करने के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी बेलबहरा भूमि के संबंध में, रीतू सिंह निवासी मुख्तियारपारा भूमि के संबंध में, बृजेन्द्र मिश्रा भूमि के संबंध में, तीरथ प्रसाद, कैलसिया, सुंदर सिंह, रूदनवती निवासी शिवगढ़ वन अधिकार पट्टा दिलाने के संबंध में, सीतारमण निवासी उजियारपुर पुलिया निर्माण कार्य में घटिया निर्माण कार्य करने के संबंध में, अपना शिकायत लेकर उपस्थित हुए थे।

कलेक्टर ने प्राप्त सभी आवेदनों को पूरी गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को उचित कार्यवाही करते हुए त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए ।

न्यू-ईयर से पहले 2 युवकों का मर्डर

6 लोगों ने दौड़ा-दौड़ाकर लाठी-डंडे से पीटा, सिर फटने से मौत, वारदात में 2 नाबालिग भी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में न्यू ईयर से पहले डबल मर्डर हुआ है। चंगोराभांटा इलाके में देर रात 2 युवकों को लाठी-डंडे से पीट-पीटकर मार डाला। बीच बस्ती में उन्हें 300 मीटर दौड़ाकर पीटा गया। मृतकों का नाम कृष्णा यादव और सचिन बड़ोले है। पुलिस ने 2 नाबालिग समेत 6 लोगों को गिरफ्तार किया है। मामला डीडी नगर थाना क्षेत्र का है।

पुलिस के मुताबिक कृष्णा और सचिन पुतला चौक स्थित मैदान में बैठकर शराब पी रहे थे। पास में ही मोहल्ले के 6 अन्य लोग भी बैठे थे, जो अलाव जलाकर बातचीत कर रहे थे, तभी दूसरे पक्ष के लोगों ने कृष्णा और सचिन को शराब पीने से मना किया। विवाद कर आरोपियों ने दोनों पर पत्थर और लाठी-डंडे से हमला कर दिया।

हत्या कर भाग गए थे आरोपी: पहले सचिन पर हमला किया गया। उसके सिर पर लाठी से वार किया गया। सिर फटने से सचिन लहूलुहान होकर वहीं गिर पड़ा। यह देखकर वहां से भाग रहे कृष्णा को आरोपियों ने दौड़ाया, फिर लाठी से उसकी भी बेरहमी से पिटाई कर दी। हत्या के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए।

छात्रा ने जीभ काटकर शिवलिंग पर चढ़ाया, सक्ती के मंदिर में साधना में बैठी, दुर्ग में पत्नी के लिए शिवभक्त ने काट ली थी जीभ

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में 11वीं की छात्रा आरुषि चौहान (16) ने अपनी जीभ काटकर भगवान शिव को चढ़ा दिया है। मंदिर परिसर में खून ही खून फैला हुआ है। जीभ काटने के बाद छात्रा ने मंदिर में खुद को बंद कर लिया है और साधना करने बैठ गई है। ठीक इसी तरह दुर्ग में भी ऐसी घटना सामने आई थी जहां मूकबधिर पत्नी के लिए शिवभक्त पति ने जीभ काट ली थी। छात्रा ने एक नोट भी छोड़ा है, जिसमें उसने लिखा है कि अगर मैं उठ जाऊंगी तो मर्डर हो जाएगा। घरवालों का कहना है कि छात्रा 2 दिनों तक साधना में लीन रहेगी। परिजनों और ग्रामीणों ने पुलिस वालों को मंदिर के अंदर जाने नहीं दिया है। मामला डभरा थाना क्षेत्र के ग्राम देवरघटा के अचरीपाली का है।

छत्तीसगढ़ में लिखा नोट- किसी की आवाज नहीं आनी चाहिए: जानकारी अनुसार सोमवार की सुबह 7 बजे छात्रा घर के पास तालाब के किनारे बने भोले बाबा के मंदिर पहुंची थी। छात्रा ने एक पेज में छत्तीसगढ़ी में नोट भी लिखा है, जिसमें कहा है 'काकरों आवाज नहीं आना चाहिए, गाड़ी या आदमी काकरो नहीं' और दूसरे पेज में लिखा कि 'अगर मैं उठ जहा तो सब के मर्डर हो जाही, चाहे मोर पापा या मम्मी या कोई अधिकारी समझ में नहीं आ रहा है आप सभी को'। इन शब्दों का मतलब है कि किसी की आवाज नहीं आनी चाहिए, गाड़ी या आदमी किसी की नहीं। अगर मैं उठ जाऊंगी तो सभी का मर्डर हो जाएगा, चाहे पापा-मम्मी हो या कोई भी अधिकारी।

पुलिस को मंदिर के अंदर नहीं जाने दिया: घटना की जानकारी पुलिस अधिकारियों को मिली तो वे मौके पर पहुंचे। लेकिन उन्हें मंदिर के अंदर जाने नहीं दिया गया। वहीं गांव के लोगों ने मंदिर को चारों तरफ को घेर लिया। छात्रा के माता पिता को पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने समझाया, लेकिन बेटी को अस्पताल ले जाने से माता पिता ने साफ इनकार कर दिया है।

1500 लोगों से 10 करोड़ की ठगी, ठगों ने केले-संतरे जैसे फलों पर कराया निवेश, कहा था-35 से अधिक देशों में है कारोबार

मीडिया ऑडीटर, कोरिया/मनेंद्रगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरिया और एमसीबी जिले में करीब 1500 लोगों से 10 करोड़ से ज्यादा की ठगी की गई है। सैनलुकर कंपनी के ऐप में लोगों ने केला और संतरे जैसे फलों पर निवेश किया। शुरुआत में उन्हें अच्छा रिटर्न मिला, लेकिन बाद में ऐप बंद हो गया। ठगों ने टेस्ला के नाम पर भी ऐप बनाया है।

कोरिया एमसीबी के लोगों के ऐप में हजारों से लेकर लाखों रुपए तक फंस गए हैं। बैकुंठपुर एसपी कार्यालय में शिकायत दर्ज कराई है। पीड़ितों ने बताया कि कैथरीन नाम की महिला निवेशकों को जवाब भी देती थी, लेकिन जब उनके पैसे फंसे तब से महिला गायब है। ठगों ने कहा था कि 35 से अधिक देशों में कारोबार है। अच्छा रिटर्न मिलेगा।

ठगों ने कहा- 35 से अधिक देशों में कारोबार: जानकारी के मुताबिक, कोरिया और एमसीबी जिले में सेनलुकर कंपनी का ठगी का कारोबार वॉट्सऐप ग्रुप के माध्यम से किया गया। वॉट्सऐप के माध्यम से ही लोगों को एपीके लिंक भेजे गए और ऐप डाउनलोड कराया गया। मेंबर्स को कंपनी के वॉट्सऐप ग्रुप से जोड़ा गया। 2 ग्रुपों में दोनों जिलों के करीब 1500 से अधिक सदस्य थे।

अच्छा रिटर्न मिलने के लालच में फंसे लोग: कंपनी ने शुरुआत में सदस्यता के लिए 550 रुपए लिए। प्रतिदिन राशि रिटर्न के रूप में दी गई। अच्छा रिटर्न मिलने पर लोगों ने तीन हजार, 7 हजार, 10 हजार, 17 हजार और 25 हजार रुपए के स्कीम में निवेश करते गए। अधिकांश निवेशकों ने एक लाख रुपए या इससे ज्यादा की राशि निवेश की है।

वॉट्सऐप पर होती थी ऑनलाइन मीटिंग: निवेशक गौरव जायसवाल और दासन सिंह ने बताया कि कंपनी के टीम लीडर ऑनलाइन मीटिंग लेते थे। ज्यादा निवेश करने के लिए कहते थे। कंपनी का संचालक कैथरीन नाम महिला को बताया गया है, जो निवेशकों को जवाब भी देती थी। ऐप से पैसों की निकासी बंद होने पर इसकी शिकायत की गई।

इसके बाद कैथरीन ने कहा कि क्रिसमस और छुट्टियों के कारण यह स्थिति बनी है। छुट्टियां समाप्त होने के बाद निकासी हो जाएगी।

ऐप के माध्यम से ही रिचार्ज कर पाते थे: कोरिया जिले की निवेशक मोना ने बताया कि हम लोग सेनलुकर कंपनी के झांसे में आए हैं। शुरू में 550 रुपए लगाए। डेली 23 रुपए 10 पैसे की इनकम होती थी। 970 रुपए 42 दिन में मिले थे। जैसे पैसे मिले, हम ऐप के प्लान को देखकर पैसा लगाते गए।

ऐप में प्रोडक्ट दिया गया था। उसमें पैसे लगाते गए। ऐप के माध्यम से ही रिचार्ज कर पाते थे। अब ऐप पूरी तरह से बंद हो गया है।

एक लाख रुपए निवेश कर फंस गई महिला: कोरिया जिले की निवेशक नीलू कुमारी ने बताया कि मैं 550 रुपए एक बार लगाई। मुझे फायदा हुआ तो 10 हजार रुपए, फिर 20 हजार रुपए लगाई। 20 हजार के बाद एक लाख रुपए निवेश किए। ठगी का शिकार हुई हूं। पैसा वापस कराने और कंपनी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

पैसा डबल करने का लालच दिया गया: कोरिया जिले की निवेशक संगीता ने बताया कि सेनलुकर कंपनी की मालकिन कैथरिन ने कहा कि छोटी-छोटी लागत से ज्यादा कमाई कर सकते हैं। 550 रुपए लगाने पर करीब 1 हजार रुपए मिले। पैसा डबल करने का लालच दिया गया। पैसा लगाते गए। मेरे साथ करीब 1500 लोग हैं, जो ठगी का शिकार हुए हैं।

पाराघाट सरपंच पद से बर्खास्त

6 साल तक चुनाव लड़ने पर लगाई गई पाबंदी, मारपीट-नशीली दवा बिक्री समेत कई केस हैं दर्ज

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर जिले के मस्तूरी जनपद पंचायत के पाराघाट सरपंच प्रदीप सोनी को पद से बर्खास्त कर दिया गया है। अनुविभागीय अधिकारी मस्तूरी ने आदेश जारी किया है। इसकी सूचना जिला निर्वाचन अधिकारी और सीईओ जपं को दी गई, ताकि ग्राम पंचायत पाराघाट में दूसरे सरपंच की नियुक्ति और यदि किसी प्रकार की वसूली बाकी हो तो की जा सके।

मारपीट, नशीली दवा की बिक्री सहित कई गंभीर आरोप: जारी आदेश में कहा गया है कि, प्रदीप सोनी जनप्रतिनिधि होते हुए भी समाज विरोधी तत्वों को बढ़ावा देते हुए अपने साथियों के साथ मिलकर मारपीट, जान से मारने की धमकी देने, गाली-गलौच और गुंडागर्दी में लिप्त है। उस पर अवैध नशीली सिरप की बिक्री करने जैसे गंभीर केस दर्ज हैं। 6 साल तक चुनाव लड़ने पर पाबंदी लगाई गई है।

भाजपा बोली- राहुल गांधी लीडर ऑफ पार्टिंइंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के बाद राहुल गांधी के वियतनाम दौरे पर भाजपा ने तंज कसा है। पार्टी प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने मंगलवार को कहा- देश शोक में है और राहुल पार्टी करने विदेश गए हैं। पूनावाला ने कहा- डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के बाद राष्ट्रीय शोक है। इस दौरान लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने छुट्टी को तरजीह दी और विदेश चले गए। उनके लिए नए साल का जश्न मनाना ज्यादा मायने रखता है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा- राहुल लीडर ऑफ ऑपोजिशन हैं। उनके लिए एलओपी का मतलब है लीडर ऑफ पार्टिंइंग, यानी पार्टी करने वाला नेता। राहुल ने सार्वजनिक तौर पर मनमोहन को पिता जैसा कहा था। उन्होंने राष्ट्रीय शोक के दौरान विदेश जाकर दिवंगत प्रधानमंत्री का अपमान किया है। भाजपा आईटी सेल प्रमुख अमित मालवीय ने 29 दिसंबर को राहुल गांधी की विदेश यात्रा पर तंज कसा था। उन्होंने कहा था कि राहुल गांधी डॉ. मनमोहन सिंह के अस्थि विसर्जन में शामिल नहीं हुए।

सवा करोड़ बीमा के लिए रची अपनी मौत की साजिश

बनासकांठा (एजेंसी)। गुजरात के बनासकांठा जिले में धनपुरा के पास 5 दिन पहले मिली जली कार की गुत्थी पुलिस ने सुलझा ली है। जांच में पता चला कि 1.26 करोड़ रुपए की बीमा राशि पाने के लिए गांव के ही एक व्यक्ति ने अपनी मौत का षड़यंत्र रचा था। आरोपी ने श्मशान से शव निकालकर उसे कार के साथ ही जला दिया था। इतना ही नहीं, 1.26 करोड़ रुपए का बीमा पास कराकर फरार भी हो गया। बनासकांठा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, 27 दिसंबर को धनपुरा गांव के लोगों ने पुलिस को जली कार मिलने की सूचना दी थी। ड्राइविंग सीट पर एक जला शव भी मिला। जांच में पता चला कि कार ढेलाणा गांव में रहने वाले दलपतसिंह परमार की है।

मुंबई-नागपुर हाईवे पर 50 से ज्यादा कार-ट्रक पंचर हुए

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुंबई-नागपुर समृद्धि हाईवे पर 50 से ज्यादा कार-ट्रक और अन्य गाड़ियां पंचर हो गईं। इससे हाईवे पर लंबा जाम लग गया और लोग रात भर फंसे रहे। दरअसल, रोड पर लोहे का बोर्ड का पड़ा था, जिसके ऊपर से ये गाड़ियां निकलती रहीं और पंचर हो गईं। घटना 29 दिसंबर को रात करीब 10 बजे वाशिम जिले के मालेगांव और वनोजा टोल प्लाजा के बीच हुई। यहां से गुजर रहे कार और ट्रक अचानक से पंचर होने लगे। पुलिस ने कहा कि बोर्ड गलती से गिरा या जानबूझकर फेंका गया, इसकी जांच की जा रही है। हाईवे पर रोज एवरेज 3 एक्सीडेंट होते हैं समृद्धि हाईवे के हाई-स्पीड कॉरिडोर की सेफ्टी पर लंबे समय से सवाल उठ रहे हैं। दिसंबर 2022 में हाईवे शुरू होने के बाद से अब तक एक्सप्रेस वे पर 1300 से ज्यादा एक्सीडेंट हुए हैं, जिनमें 150 से ज्यादा लोगों की मौत हुई है। एक्सप्रेस वे पर हर दिन एवरेज 3 एक्सीडेंट होते हैं। जून में हाईवे पर कदवांची गांव के पास 2 कारों के बीच हुई टक्कर में 6 लोगों की मौत और 4 घायल हो गए थे। जुलाई 2023 में एसी स्लीपर बस में आग लगने से 25 लोगों की मौत हो गई थी। जुलाई में दरार पड़ने का वीडियो सामने आया था इससे पहले कांग्रेस ने 11 जुलाई को समृद्धि हाईवे पर दरारें पड़ने का वीडियो शेयर किया था।

सांस्कृतिक वैविध्य ही हमारी पहचान-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत विभिन्न धर्मों, समाजों, भाषाओं और संस्कृतियों का देश है। सब मिलकर यहां सद्भावपूर्वक रहते हैं। सांस्कृतिक वैविध्य ही हमारी संस्कृति की पहचान है। हमारी आस्था और जीवन मूल्य हमें विकास की ओर ले जाते हैं। योग, तप, साधना और साहचर्य से जीवन का समग्र विकास की शिक्षा सिर्फ भारतीय संस्कृति ही सिखाती है। समाज में जनजागृति लाने में महर्षियों की बड़ी अहम भूमिका रही है। महर्षि श्री बालीनाथ जी बैरवा उन्हीं में से एक थे। वे परम संत थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को उज्जैन में महर्षि श्री बालीनाथ जी बैरवा जयंती

कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जो असंभव दिखता है, वो केवल सनातन धर्म में ही संभव है। महर्षि बालीनाथ जी ने समाज की कुरीतियों, रूढ़ियों और बुराइयों को खत्म किया और सबको सद्मार्ग की ओर ले जाने का काम किया। उन्होंने बालीनाथ जी की स्मृति में देश के दूरदराज से आए बैरवा समाजजन का अभिनंदन करते हुए कहा कि इस प्रदेश स्तरीय सामाजिक कार्यक्रम में आकर वे बेहद प्रसन्न है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री अखिल जूनवाल द्वारा लिखित पुस्तक भीम वंदना का विमोचन भी किया। इसके बाद बैरवा समाज की बाईक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कौशल विकास एवं रोजगार विभाग एवं उज्जैन जिले के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, अखिल भारतीय बैरवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेश जारवाल, श्री लालाराम बैरवा, श्री राधेश्याम बैरवा, श्री मुकेश टेटवाल, श्री सी.एल. बैरवा, श्री प्रभुराम सहित अन्य समाजजन उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार अगले साल बैरवा समाज की राज्य स्तरीय पंचायत का आयोजन करेगी। इसमें देश के विभिन्न अंचलों में रह रहे बैरवा समाजजनों को आमंत्रित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में हो रहे औद्योगिक विकास में बैरवा समाज के उद्योगपति और व्यवसायियों को जोड़कर बैरवा समाज का सर्वांगीण विकास करेगी।

उन्होंने कहा कि बैरवा समाज के बच्चे खूब पढ़ें, लिखें और आगे बढ़ें, इसके लिए सरकार हर जरूरी प्रयास और सहयोग भी करेगी।

इसरो का स्पेडेक्स मिशन लॉन्च

श्रीहरिकोटा (एजेंसी)। इसरो ने 30 दिसंबर को श्रीहरिकोटा से रात 10 बजे एसपीएडीईएक्स यानी, स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट मिशन लॉन्च किया। इसके तहत पीएसएलवी-सी 60 रॉकेट से दो स्पेसक्राफ्ट को पृथ्वी से 470 किमी ऊपर डिप्लॉय किया गया। अब 7 जनवरी 2025 को इस मिशन में अंतरिक्ष में बुलेट की स्पीड से दस गुना ज्यादा तेजी से ट्रैवल कर रहे इन दो स्पेसक्राफ्ट्स को कनेक्ट किया जाएगा। मिशन सफल रहा तो रूस, अमेरिका और चीन के बाद भारत ऐसा करने वाला चौथा देश बन जाएगा। मिशन की कामयाबी पर ही भारत का चंद्रयान-4 मिशन निर्भर है, जिसमें चंद्रमा की मिट्टी के सैंपल पृथ्वी पर लाए जाएंगे। चंद्रयान-4 मिशन को 2028 में लॉन्च किया जा सकता है। स्पेडेक्स मिशन ऑब्जेक्टिवः डॉकिंग और अनडॉकिंग टेक्नोलॉजी दुनिया को दिखाना पृथ्वी की निचली कक्षा में दो छोटे स्पेसक्राफ्ट की डॉकिंग और अनडॉकिंग की टेक्नोलॉजी डेमोंस्ट्रेट करना। डॉक किए गए दो स्पेसक्राफ्ट्स के बीच इलेक्ट्रिक पावर ट्रांसफर करने की टेक्नोलॉजी को डेमोंस्ट्रेट करना। स्पेस डॉकिंग का मतलब है स्पेस में दो अंतरिक्ष यानों को जोड़ना या कनेक्ट करना।

पंजाब सरकार बोली- डल्लेवाल बातचीत के लिए तैयार

चंडीगढ (एजेंसी)। खनौरी बॉर्डर पर 36 दिन से आमरण अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत डल्लेवाल को अस्पताल में भर्ती कराने के लिए पंजाब सरकार को 3 दिन की मोहलत मिल गई है। मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस सुधांशु धूलिया की बैंच ने इसकी सुनवाई की।

जिसमें पंजाब सरकार ने कहा कि कल पंजाब बंद था, जिस वजह से ट्रैफिक नहीं चला।

इसके अलावा एक मध्यस्थ ने भी आवेदन दिया है जिसमें कहा गया है कि अगर यूनियन हस्तक्षेप करती है तो डल्लेवाल बातचीत के लिए तैयार हैं। जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने

पंजाब सरकार के समय मांगने के आवेदन को मंजूर कर लिया। इस अवमानना मामले की अगली सुनवाई अब 2 जनवरी को होगी। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने 28 दिसंबर की सुनवाई में पंजाब सरकार को 31 दिसंबर तक का टाइम दिया था।

सुप्रीम कोर्ट में पंजाब के वकील गुरमिंदर सिंह कल 2 चीजें बीच में आ गईं। पंजाब बंद था, जिस वजह से कल सोमवार को ट्रैफिक बिल्कुल भी नहीं चला। एक मध्यस्थ ने भी आवेदन दिया है जिसमें कहा गया है कि अगर यूनियन हस्तक्षेप करती है तो डल्लेवाल बातचीत के लिए तैयार हैं।

नए साल में रेलवे का नया टाइम टेबल लागू होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन रेलवे का नया टाइम टेबल अब 1 जनवरी 2025 से लागू होगा। इसके तहत कई ट्रेनों की टाइमिंग में बदलाव किया जाएगा। साथ ही कई ट्रेनों की संख्या भी बदल जाएगी। पहले यह बदलाव हर साल 30 जून को होता था और 1 जुलाई से लागू हो जाता था। लेकिन रेलवे इस बार समय सारणी में बदलाव नए साल के मौके पर कर रहा है। यह ट्रेंस एट ए ग्लांस का 44वां एडिशन है। रेल मंत्रालय 2025 में नमो भारत रैपिड रेल (वंदे मेट्रो), दो अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें और सभी 136 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें शुरू करने का मन बना रहा है। 2024 में 64 वंदे भारत ट्रेनें शुरू हुईं। 26 दिसंबर 2024 तक भारतीय रेलवे नेटवर्क पर कुल 136 वंदे भारत ट्रेन सेवाएं चल रही हैं। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का कहना है कि 2025 में रेलवे को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस करने की कोशिश की जाएगी। महाकुंभ में 13 हजार ट्रेनें चलेंगी रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के अनुसार, महाकुंभ के लिए 13,000 ट्रेनों का संचालन किया जाएगा, जिनमें 3,000 विशेष मेले की ट्रेनें शामिल होंगी। अनुमान है कि इस महाकुंभ में 45 करोड़ श्रद्धालु शामिल होंगे, जिनमें से लगभग 10 करोड़ ट्रेन से यात्रा करेंगे।

सड़क किनारे खड़े 13 लोगों को ट्रक ने कुचला

रायपुर (एजेंसी)। साल 2024 के आखिरी दिन राजधानी रायपुर में भयकंर सड़क हादसा हो गया। जहां अमरकंटक से लौट रहे 13 लोगों को तेज रफ्तार ट्रक ने कुचल दिया। घटना राजधानी के सिलतरा की है जहां सड़क किनारे खड़े 13 लोगों को तेज रफ्तार ट्रक ने अपनी चपेट में ले लिया। इनमें 2 लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि 11 लोग गंभीर घायल हुए हैं, जिनमें से 3 लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। घायलों को आईसीयू में शिफ्ट किया गया है। बताया जा रहा है कि अमरकंटक से लौट रहे लोगों की गाड़ी

सिलतारा के पास खराब हो गई। गाड़ी की रिपेयरिंग हो रही थी। ऐसे में सभी लोग सड़क किनारे खड़े होकर इंतजार करने लगे। सभी लोग धमतरी के बताए जा रहे हैं धमतरी का साहू परिवार न्यू ईयर से पहले अमरकंटक दर्शन करने के गए थे। रात में अमरकंटक से धमतरी से लौट रहे थे तूफान गाड़ी में महिलाएं और बच्चों को मिलाकर 13 लोग सवार थे। इसी दौरान धरसीवा थाना क्षेत्र के सिलतरा के पास उनकी तूफान पहले किसी अन्य गाड़ी से टकरा गई जिसमें कई लोग घायल हो गए।

इस दौरान गाड़ी में कोई फॉल्ट पड़ गया सभी लोग गाड़ी से उतरकर सड़क किनारे खड़े हो गए और गाड़ी के सही होने का इंतजार करने लगे। इसी दौरान पीछे से आए ट्रक ने सबको अपनी चपेट में ले लिया।

भाजपा ने केजरीवाल को भूल-भुलैया फिल्म का छोटा पंडित बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को राजधानी में पुजारी-ग्रंथी योजना लॉन्च की। केजरीवाल ने कश्मीरी गेट के मरघट वाले बाबा के मंदिर में पत्नी के साथ दर्शन किए और वहां के पुजारी का पहला रजिस्ट्रेशन कराया। योजना के तहत पुजारियों-ग्रंथियों को हर महीने 18 हजार रुपए सैलरी देने का वादा किया गया है।

भाजपा ने एक्स पर एक पोस्टर जारी किया, जिसमें अरविंद केजरीवाल को भूल-भुलैया फिल्म के छोटा पंडित (राजपाल यादव) के किरदार में दिखाया। भाजपा ने उन्हें चुनावी हिंदू बताया है।

भाजपा ने लिखा- जो 10 साल से इमामों को सैलरी बांटता रहा। जो खुद और उनकी नानी प्रभु श्रीराम का मंदिर बनने से खुश नहीं थे। जिसने मंदिर और गुरुद्वारों के बाहर शराब के ठेके खोले। जिसकी पूरी राजनीति हिंदू विरोधी रही, उसे अब चुनाव आते ही पुजारियों और ग्रंथियों की याद आई?

केजरीवाल ने जवाब में कहा, जब से पुजारी ग्रंथी सम्मान योजना की घोषणा हुई है, भाजपा वाले मुझे गंदी-गंदी गालियां दे रहे हैं। क्या मुझे गाली देने से देश का फायदा होगा? आपकी 20 राज्यों में सरकारें हैं।

कन्याकुमारी में देश के पहले समुद्री ग्लास ब्रिज का हुआ शुभारंभ

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश का पहला समुद्री ग्लास ब्रिज तमिलनाडु के कन्याकुमारी के तट पर बनकर तैयार हो गया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने 77 मीटर लंबे और 10 मीटर चौड़े इस ब्रिज का उद्घाटन सोमवार शाम को किया। ब्रिज के बनने से टूरिस्ट कन्याकुमारी के तट पर विवेकानंद रॉक मेमोरियल से सीधे 133 फीट ऊंची तिरुवल्लुवर प्रतिमा तक पहुंच सकते हैं। इस प्रोजेक्ट के लिए राज्य सरकार के 37 करोड़ रुपए खर्च हुए। कन्याकुमारी के टूरिजम अधिकारी ने बताया कि ग्लास ब्रिज पर नीचे समुद्र है। ब्रिज पर चलने से ऐसा लगता है जैसे हम समुद्र पर चल रहे हों। धनुषाकार आर्च ग्लास ब्रिज को तट पर चलने वाली तेज हवा को झेलने के हिसाब से डिजाइन किया है। उद्घाटन के दौरान ष्टरू स्टालिन, डिप्टी ष्टरू उदयनिधि स्टालिन, राज्य के मंत्रियों और सांसद कनिमोझी पुल पर पैदल चले। उद्घाटन के बाद तिरुवल्लुवर की प्रतिमा पर लेजर लाइट शो का भी आयोजन किया गया।

मणिपुर हिंसा पर सीएम बोले- मुझे माफ करें

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के सीएम बीरेन सिंह ने राज्य में हुई हिंसा और उसमें हुई जनहानि को लेकर माफी मांगी है। बीरेन सिंह ने कहा कि पूरा साल बहुत दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। इसका मुझे बहुत दुख है। 3 मई 2023 से लेकर आज तक जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए मैं राज्य के लोगों से माफी मांगता हूं। ष्टरूबीरेन सिंह ने सेक्रेटिएट में मीडिया से चर्चा के दौरान कहा- कई लोगों ने अपने प्रियजन को खो दिया। कई लोगों ने अपना घर छोड़ दिया। मुझे वास्तव में खेद है। मैं माफी मांगना चाहता हूं।

मणिपुर में 3 मई 2023 से कुकी-मैतेई समुदाय के बीच हिंसा जारी है। मैतेई-कुकी समुदाय के बीच भड़की हिंसा को 600 से ज्यादा दिन बीत चुके हैं। बीरेन ने बताया, मणिपुर में मई 2023 से अक्टूबर 2023 तक गोलीबारी की 408 घटनाएं दर्ज की गईं। नवंबर 2023 से अप्रैल 2024

तक 345 घटनाएं हुईं। मई 2024 से अब तक 112 घटनाएं सामने आई हैं। हालांकि, राज्य में पिछले महीने से शांति है। हिंसा की कोई घटना नहीं हुई। छिटपुट प्रदर्शन के लिए भी लोग सड़कों पर नहीं उतरे। सरकारी दफ्तर रोजाना खुल रहे हैं और स्कूल में बच्चों की तादाद बढ़ रही है। बीरेन सिंह ने कहा, अब तक कुल मिलाकर लगभग 200 लोग मारे गए हैं और लगभग 12,247 एफआईआर दर्ज की गई हैं। 625 आरोपियों गिरफ्तार हुए हैं। लगभग 5,600 हथियार और विस्फोटकों समेत लगभग 35,000 गोला-बारूद बरामद किए गए हैं। मुद्दों से निपटने में भी कामयाबी मिली है। केंद्र सरकार ने विस्थापित परिवारों की मदद के लिए पर्याप्त सुरक्षाकर्मी और धनराशि दी है। विस्थापितों के लिए नए घर बनाने के लिए भी पैसा दिया गया है।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर ने दी रोहित को संन्यास की सलाह

मेलबन(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर मार्क वॉ ने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा को संन्यास की सलाह दी है। मार्क ने साथ ही कहा कि अगर वह चयनकर्ता होते तो रोहित को संन्यास लेने को कह देते। रोहित टी20 विश्व कप के बाद से ही फार्म में नहीं हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में भी वह रन नहीं बना पाये थे। इससे वह आलोचकों के साथ ही पूर्व क्रिकेटरों के भी निशाने पर हैं। मार्क के इस बयान का कुछ लोगों ने समर्थन किया है। वहीं कुछ ने कहा कि उन्हें पहले अपनी टीक के मिचेल मार्श का रिकार्ड देखना चाहिये। मार्श भी इस सीरीज में विफल रहे हैं। वॉ ने कहा, अगर मैं अभी चयनकर्ता होता तो कहता कि मेलबर्न में जब रनों की जरुरत थी तो वह दूसरी पारी में केवल 9 रन ही बना पाये। ऐसे में सिडनी में आपको नहीं लिया जा सकता। मैं कहता, रोहित आपकी सेवा के हम आभारी हैं। आप एक बेहतरीन खिलाड़ी रहे हैं पर हम अब जसप्रीत बुमराह को कप्तान बनाने जा रहे हैं और यह आपके करियर का अंत होगा। रोहित के लिएए यह सीरीज किसी खराब सपने से कम नहीं रही है। उन्होंने 5 पारियों में 31 रन बनाए हैं, जबकि कप्तान के तौर पर भी वह बहुत सफल नहीं रहे हैं। वहीं भारत ने पहला टेस्ट बुमराह की कप्तानी में शानदार तरीके से जीता था।

बुमराह, रुट सहित चार खिलाड़ी आईसीसी के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर के लिए नामांकित

दुबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के साल के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर के लिए नामांकित किया गया है।

बुमराह के अलावा इस पुरस्कार की दौड़ में ऑस्ट्रेलिया के ट्रैविस हेड और इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट और हैरी ब्रुक भी हैं। बुमराह ने टी20 विश्वकप के आठ मैचों में 15 विकेट लिए, जिसमें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में लिए दो विकेट भी शामिल हैं, जिससे भारतीय टीम 2024 टी20 विश्व कप में अपराजेय रही है। बुमराह ने 13 टेस्ट मैचों में 71 विकेट लेकर टेस्ट प्रारुप में भी शानदार रिकार्ड बनाया है। ऑस्ट्रेलिया में चल रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में बुमराह 12.83 की औसत से 30 विकेट लेकर सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में सबसे आगे हैं। उन्होंने 200 टेस्ट विकेट भी पूरे किये हैं। वह 20 से कम औसत के साथ यह उपलब्धि हासिल करने वाले पहले गेंदबाज हैं।

वहीं बल्लेबाजी की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड ने भी सभी प्रारूपों में अच्छा प्रदर्शन किय है। 2023 आईसीसी विश्व कप फाइनल के बाद से ही हेड जबरदस्त फॉर्म में हैं। उन्होंने 2024 टी20 विश्व कप में सात पारियों में 255 रन बनाये थे। इसके अलावा टेस्ट प्रारुप की बात करें तो मौजूदा बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में वह सबसे ज्यादा रन बनाने वाला खिलाड़ी बने हैं। वहीं इंग्लैंड के प्रमुख बल्लेबाज रूट भी पुरस्कार की दौड़ में शामिल हैं।

भारत के बॉक्सिंग डे टेस्ट गंवाने के बाद अश्विन के पोस्ट से मचा बवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के अनुभवी पूर्व स्पिनर आर अश्विन ने ऑस्ट्रेलियाई दौरे के दौरान गाबा टेस्ट के बाद इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया। हालांकि, अश्विन सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहते हैं। वहीं मेलबर्न टेस्ट के दौरान वह लगातार एक्स पर पोस्ट करते रहते। इस दौरान उनकी एक क्रिप्टिक पोस्ट पर बवाल मच गया। अश्विन ने पहलो तो ट्रोलर्स के मजे लिए लेकिन बाद में उन्हें इसकी सफाई भी देनी पड़ी। अश्विन ने सोमवार सुबह 9 बजकर 49 मिनट पर एक पोस्ट किया। जिसमें उन्होंने लिखा कि, अच्छे लीड तब उतबरते हैं जब वे किसी भी चीज के लिए संकल्प दिखाते हैं। इस पोस्ट में न तो उन्होंने किसी का नाम लिखा था और न ही ये बताया गया था कि किस बारे में है। विराट कोहली और रोहित शर्मा के फैंस को ये उनके स्टार खिलाड़ियों पर तंज सा लगा। जिसके बाद ट्रोलिंग का सिलसिला सुरू हुआ। अश्विन ने कुछ समय बाद इसी पोस्ट पर जवाब देते हुए लिखा कि, ये ट्वीट उन लोगों के लिए नहीं है जिनके पास फैन क्लब है। मामला यहां भी नहीं थमा। फैंस ने अश्विन को कोहली और रोहित से न जलने की सलाह दी।

शार्दुल ठाकुर संभालेंगे मुंबई की कमान, हार्दिक पंड्या प्लेइंग इलेवन से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। विजय हजारे ट्रॉफी के राउंड 5 के मुकाबले मंगलवार यानी 31 दिसंबर को खेला जा रहा है। 14 महीने बाद 50 ओवरों के क्रिकेट में वापसी करने वाले हार्दिक पंड्या एक मैच खेलने के बाद बड़ौदा की प्लेइंग 11 से बाहर हो गए। बंगाल के खिलाफ मैच में पंड्या का बल्ला नहीं बोला। वह महज 1 रन बनाकर आउट हो गए। इसके अलावा उन्होंने 7 ओवर में 33 रन देकर सिर्फ एक विकेट झटका।

बंगाल ने बड़ौदा को 7 विकेट से हराया था। अब बिहार के खिलाफ हार्दिक नहीं खेले। मुंबई की टीम ने कप्तान श्रेयस अय्यर और सूर्यकुमार यादव को नागालैंड के खिलाफ मैच में आराम दिया है। शार्दुल ठाकुर को कमान सौंपी गई है। मुंबई की टीम 4 में से 2 मैच जीती है और 2 हारी है। नागालैंड के खिलाफ उसने शानदार बल्लेबाजी की है। 36 ओर के बाद टीम 300 के करीब है।

पंजाब ने सौराष्ट्र के खिलाफ मात्र 34 ओवर में 306 रन ठोक दिए हैं। अभिषेक शर्मा और प्रभसिमरन सिंह ने तूफानी बल्लेबाजी की है। अभिषेक शर्मा ने 96 गेंद पर 170 तो प्रभसिमरन सिंह ने 95 गेंद पर 125 रन बनाए। दोनों ने पहले विकेट के लिए 298 रन की साझेदारी की। प्रभसिमरन के आउट होने के एक ओवर बाद ही अभिषेक भी आउट हो गए।

इस साल हार्दिक पंड्या से लेकर सानिया मिर्जा सहित इन खिलाड़ियों को मिला दुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। कई भारतीय तो कई विदेशी खिलाड़ियों के लिए पीड़ादयाक रहा। समस्योओं के बाद भी कुछ खिलाड़ियों ने खुद को मजबूती से खड़ा किया और वापस अपने जीवन को ट्रैक पर लाए। इनमें तीन खिलाड़ी हार्दिक पंड्या, सानिया मिर्जा और पाकिस्तान किया सना फातिमा हैं जिन्होंने कई दुख झेले हैं। साल 2024 अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रहा है और नया साल 2025 आने वाला है। खेल जगत में इस वर्ष हलचल देखने को मिली। जहां टीम इंडिया ने टी20 वर्ल्ड कप खिताब अपने नाम किया। तो ओलंपिक और पैरालंपिक में भी भारत की तरफ से धाकड़ प्रदर्शन देखने को मिला। ये साल कई खिलाड़ियों के लिए बेहद अच्छा रहा। तो कुछ खिलाड़ी ऐसे भी रहे जिन्हें इस साल दुख झेलने को मिला। ये साल कई भारतीय तो कई विदेशी खिलाड़ियों के लिए पीड़ादयाक रहा। समस्योओं के बाद भी कुछ खिलाड़ियों ने खुद को मजबूती से खड़ा किया और वापस अपने जीवन को ट्रैक पर लाए। इनमें तीन खिलाड़ी हार्दिक पंड्या, सानिया मिर्जा और पाकिस्तान किया सना फातिमा हैं जिन्होंने कई दुख झेले हैं।

सानिया मिर्जा

भारतीय टेनिस स्टार सानिया मिर्जा के लिए ये साल कहीं से भी अच्छा नहीं रहा। इस साल सानिया को हार्ट ब्रेक से गुजरना पड़ा। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर शोएब मलिक के साथ 2010 में शादी के बाद सानिया मिर्जा का तलाक हो गया और दोनों के रास्ते अलग हो गए। सानिया ने इस दर्द को कैसे झेला होगा, ये खुद ही जानती हैं। हालांकि इस मुश्किल समय में फैंस ने उन्हें काफी सपोर्ट किया।

हार्दिक पंड्या

वहीं टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या का ये साल शुरुआत से अच्छा नहीं रहा। आईपीएल में मुंबई इंडियंस की कमान मिलने के बाद फैंस ने लगातार उन्हें ट्रोल किया। उसके बाद इस सीजन में मुंबई को बेहद खराब प्रदर्शन के कारण बड़ी नकामयाबी देखने को मिली। ये सब खत्म भी नहीं हुआ था कि उनका घर भी टूट गया। दरअसल, उनकी अपनी पत्नी नताशा से राहें अलग हो गईं। 2020 में शादी करने वाली सर्बियन मॉडल और एक्टर नताशा स्टैनकोविक के साथ उनकी नहीं बनी। दोनों का तलाक हो गया। दोनों ने इसकी घोषणा की।

सना फातिमा

वहीं पाकिस्तान की महिला टी20 टीम की कप्तान सना फातिमा के लिए भी ये साल अच्छा नहीं रहा। सना के पिता का हाथ उनके ऊपर से हमेशा के लिए उठ गया। इस साल टी20 वर्ल्ड जैसा अहम टूर्नामेंट खेल रही सना को बीच टूर्नामेंट को छोड़कर जाना पड़ा। सना के पिता का निधन हो गया। हालांकि, सना को खुद को कमजोर नहीं होने दिया और टूर्नामेंट के लिए बीच में वापसी की।

अस्पताल में भर्ती विनोद कांबली के पास नहीं हैं पैसे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ये कहना गलता होगा कि टीम इंडिया के पूर्व खिलाड़ी विनोद कांबली मौजूदा समय में पाई-पाई के मोहताज हो रखे हैं। क्योंकि वह इस समय पुणे के अस्पताल में भर्ती हैं और वह अपने करीबियों से संपर्क नहीं कर पा रहे हैं। इसका कारण ये है कि, 52 वर्षीय दिग्गज आईफोन की मरम्मत के लिए 15 हजार का भुगतान करने में विफल रहने के बाद 6 महीन से ज्यादा समय से मोबाइल फोन के बिना हैं। दुकानदार ने फोन रख लिया है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां दुख और बढ़ा देती हैं।

विनोद कांबली मौजूदा समय में ठाणे के आकृति अस्पताल में भर्ती हैं। जहां वह मस्तिक में खून के थक्के जमने और यूरीन इंफेक्शन से उबर रहे हैं। हालांकि, उनकी हालत स्थिर हो गई है, लेकिन डॉक्टरों ने मेमोरी लॉस के लक्षण देखे हैं। उनके इलाज की देखरेख कर रहे डॉ द्विवेदी ने कहा कि, समय और पुनर्वास के साथ उनकी 80-90 प्रतिशत याददाश्त वापस आ सकती है।

वहीं 13 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति के मालिक विनोद कांबली अब बीसीसीआई से मिलने वाली 30 हजार रुपये की मासिक पेंशन पर निर्भर हैं। उनकी पत्नी एंड्रिया हेविट ने 18 लाख रुपये के रखरखाव शुल्क का भुगतान न किए जाने को लेकर अपनी हाइसिंग सोसाइटी से उत्पीड़न का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि, सोसाइटी में उनकी तस्वीर डिफॉल्टर के तौर पर लगाई गई है। वहीं शिवसेना ने कांबली के इलाज के लिए 5 लाख रुपये की मदद की पेशकश की है। हालांकि, ये राशि शायद उनके लिए पूरी न पड़े क्योंकि उनकी स्वास्थ्य और वित्तीय चुनौतियां की फेहरिस्त बहुत लंबी है।

प्रीमियर लीग की जनवरी 2025 में ट्रांसफर विंडो खुलने और बंद होने की पूरी जानकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 2025 जनवरी की ट्रांसफर विंडो लगभग खुल गई है। यहां इंग्लैंड की ईपीएल सहित यूरोप और दुनिया ज्यादातर बड़ी फुटबॉल लीग के लिए विंडो ओपन हो रही हैं। वहीं ये ट्रांसफर विंडो सबसे ज्यादा व्यस्त होने वाली है। क्योंकि क्लब सिल्वरवेयर, या अस्तित्व की खोज में मजबूत होने की पूरी कोशिश करेंगे। सभी लीगों के क्लब समय सीमा के बाद भी खिलाड़ियों को स्वतंत्र एजेंट के रूप में अनुबंधित कर सकेंगे। बशर्ते कि वे सोमवार यानी 3 फरवरी को आधिकारिक रूप से किसी क्लब से न जुड़े हों। अलग-अलग ट्रांसफर विंडो वाली लीगों के बीच डील पर सहमति बन सकती है। जब साइनिंग क्लब की विंडो खुली होगी तब वे आधिकारिक रूप से पूरे हो जाएंगे।

ट्रांसफर विंडो क्या होती है?

यूरोप और दुनिया की ज्यादातर बड़ी फुटबॉल लीग में टीमें खिलाड़ियों को ट्रांसफर विंडो में अपने साथ जोड़ती हैं। साल में दो बार ऐसी विंडो ओपन होती है। एक विंडो मिड सीजन यानी सीजन के बीच में और एक विंडो ऑफ सीजन यानी दो सीज के बीच में ओपन होती है। अगर कोई खिलाड़ी पहले से किसी क्लब के साथ अनुबंध में है तो कई दूसरी टीम उस

क्लब को ट्रांसफर फीस चुकाकर उस खिलाड़ी को अपने साथ जोड़ सकती है। अगर कोई खिलाड़ी कहीं अनुबंध में नहीं है तो क्लब सीधे उससे कॉन्ट्रैक्ट कर सकता है। 2025 शीतकालीन स्थानांतरण विंडो और समय-सीमा के बारे में पूरी जानकारी यहां देख सकते हैं।

प्रीमियर लीग ट्रॉसफर विंडो

प्रीमियर लीग ट्रांसफर बाजार बुधवार यानी 1 जनवरी को फिर से खुलेगा और सोमवार 3 फरवरी तक बंद हो जाएगा। इसमें सभी यूरोपीय लीग शामिल हैं। इंग्लैंड में विंडो रात 3 फरवरी को रात के 11 बजे (यूके समयानुसार) बंद हो जाएगी। मुख्य यूरोपीय विंडो भी सोमवार 3 फरवरी 2025 को बंद हो जाएंगी। बुंडेसलिगा की समय सीमा पहले (शाम 5 बजे यूके) है, उसके बाद सीरी ए (शाम 7 बजे), फ्रांस में लीग 1 (रात 10 बजे) और अंत में ला लीगा, जो इंग्लैंड की तरह, रात 11 बजे है।

नीदरलैंड और पुर्तगाल में, टीमों के पास मंगलवार 4 फरवरी 2025 को ट्रांसफर विंडो बंद होने से पहले अपना काम खत्म करने के लिए एक अतिरिक्त दिन होगा। तुर्की के पास भी मंगलवार 11 फरवरी तक का समय है, जबकि स्विट्जरलैंड सोमवार 17 फरवरी को और पोलैंड शनिवार 22 फरवरी को बंद होगा। हालांकि, सऊदी अरब की विंडो यूरोप की तुलना में शुक्रवार 31 जनवरी को पहले बंद हो जाती है।

जींस पहनकर खेलने की अनुमति मिलने के बाद विश्व ब्लिटज चैम्पियनशिप में लौटे कार्लसन

नई दिल्ली (एजेंसी)। फिडे से खिलाड़ियों को जींस पहनकर खेलने की अनुमति मिलने के बाद दुनिया के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन विश्व ब्लिट्ज चैम्पियनशिप में लौटे जिन्हें ड्रेस कोड के उल्लंघन के कारण रैपिड वर्ग से बाहर कर दिया गया था।

दरअसल, पांच बार के विश्व चैम्पियन कार्लसन पर शनिवार को फिडे के ड्रेस कोड का उल्लंघन करके जींस पहनकर आने के बाद200 डॉलर का जुर्माना लगाया गया था। टूर्नामेंट के नियमों के अनुसार जींस पहनना मना है। उन्होंने तुरंत कपड़े बदलकर आने का अनुरोध मानने से इनकार कर दिया तो उन्हें अयोग्य करार दिया गया। टूर्नामेंट में रैपिड चैम्पियनशिप के नौवें दौर में उन्हें किसी के खिलाफ उतारा नहीं गया।

नीति में बदलाव की घोषणा करते हुए अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) के अध्यक्ष अर्काडी वोरवोविच ने कहा ,'' मैंने पोशाक की उपयुक्तता के संबंध में निर्णय लेने में फिडे अधिकारियों को अधिक लचीलापन प्रदान करने के लिए इस नजरिये का प्रयोग करने का फैसला किया है।'' उन्होंने कहा ,'' नियम सरल है कि आधिकारिक ड्रेस कोड का अभी भी

पालन करना होगा लेकिन थोड़े से बदलाव (जैकेट के साथ जींस) की अनुमति दी गई है। बयान में कहा गया ,'' फिडे को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि मैग्नस कार्लसन फिडे विश्व ब्लिट्ज चैम्पियनशिप में भाग लेंगे।'' कार्लसन ने रविवार को टूर्नामेंट के दौरान फिडे उपाध्यक्ष और भारत के महान खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद से मुलाकात की। बयान में कहा गया ,'' फिडे कार्लसन और विश्व शतरंज समुदाय के साथ मिलकर फिडे प्रतिस्पर्धाओं में खिलाड़ियों और प्रशंसकों को सर्वश्रेष्ठ अनुभव देने की दिशा में काम करता रहेगा।''

कार्लसन ने अपनी भागीदारी की पुष्टि करते हुए कहा ,'' मैं न्यूयॉर्क में कम से कम एक दिन और खेल रहा हूं। अच्छा खेला तो अगले दिन भी। हमने कल इस बारे में बात की और फिडे अध्यक्ष से हमारे अच्छे संबंध हैं।'' आनंद ने कहा था कि फिडे के पास कार्लसन को अयोग्य करार देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था क्योंकि उन्होंने नियम को मानने से इनकार कर दिया था।

चोरी के 10 मोबाइल के साथ युवक गिरफ्तार

रेलवे कॉलोनी के खंडहरनुमा मकान में छिपाकर रखता था

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना जीआरपी ने चोरी के 10 मोबाइल फोन के साथ एक युवक को पकड़ा है। मोबाइल की कीमत 2 लाख रुपए बताई गई है। युवक मोबाइल चोरी कर एक खंडहर नुमा मकान में छिपा देता था।

बेचने की फिराक में दबोच गया: जीआरपी चौकी प्रभारी राजेश राज के मुताबिक, मुखबिर से सूचना मिली कि एक युवक रेलवे कॉलोनी स्थित शारदा मंदिर के पास चोरी का मोबाइल बेचने की फिराक में घूम रहा है। पुलिस ने सूचना की तस्दीक की और आरोपी सुमित उर्फ रजनीश चौधरी (20 वर्ष) को पकड़ लिया। उसने रेवांचल एक्सप्रेस से मोबाइल चोरी करना स्वीकार किया।

पूछताछ में उगला राज: जीआरपी ने आरोपी सुमित से पूछताछ की तो उसने चोरियों का खुलासा किया। आरोपी पुलिस टीम को रेलवे कॉलोनी के एक खंडहरनुमा मकान में ले गया। वहां से 9 महंगे मोबाइल बरामद किए। जीआरपी चौकी प्रभारी राजेश राज ने बताया कि आरोपी ट्रेन और प्लेटफॉर्म पर मोबाइल चोरी करता था।

सतना में सूने मकान से लाखों की चोरी

मथुरा-वृंदावन गया हुआ है परिवार, जेवर, नकदी और सीसीटीवी की डीवीआर भी ले गए बदमाश

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना के बगहा मोहल्ले में सोमवार रात एक सूने मकान से लाखों के जेवर, नकदी समेत सीसीटीवी कैमरे के डीवीआर चोरी हो गए।

सिविल लाइन पुलिस के अनुसार, फरियादी विनीत झा ने रिपोर्ट की है कि वह परिवार के साथ मथुरा-वृंदावन में हैं। घर में कोई नहीं है। पड़ोसियों ने फोन पर घर में चोरी होने की सूचना दी। इसके बाद पुलिस उनके घर पहुंची तो सामान बिखरा हुआ था। विनीत को वीडियो कॉल के जरिये घर की स्थिति दिखाई गई।

प्रारंभिक तौर पर उन्होंने आलमारी में रखे गहने और नकदी के अलावा सीसीटीवी कमरे का डीवीआर चोरी होना बताया है। मथुरा से विनीत झा परिवार समेत सतना के लिए रवाना हो चुके हैं।

विकासखण्ड स्तरीय चिकित्सीय मूल्यांकन शिविर का आयोजन 2 से 10 तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के आदेशानुसार एवं एल्मिको जबलपुर के निर्देशानुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) के औपचारिक पहचान एवं चिकित्सीय मूल्यांकन शिविर, भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एल्मिको) जबलपुर के सहयोग से आयोजित किया जाना है। सतना जिले में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नागौद में 2 जनवरी, शासकीय माडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मझगवां में 3 जनवरी, शासकीय गांधी केन्द्र विद्यालय उचेहरा में 6 जनवरी, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामपुर बघेलान में 7 जनवरी तथा शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय धवारी में 10 जनवरी को प्रातः 10 बजे से मूल्यांकन शिविर आयोजित किये जायेंगे।

कलेक्टर अनुराग वर्मा द्वारा चिकित्सीय मूल्यांकन शिविरों के सफल क्रियान्वयन/संचालन हेतु जिला/विकासखण्ड स्तरीय लोक सेवकों को दायित्व सौंपें गये है। जिसके अनुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को 4 चिकित्सा विशेषज्ञों अस्थि रोग, नेत्र रोग, नाक, कान गला रोग, मनोवैज्ञानिक अथवा अन्य विशेषज्ञ को नियुक्त कर शिविर में उपस्थित सीडब्ल्यूएसएन बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी करना सुनिश्चित करेंगे। उप संचालक सामाजिक न्याय विभाग को दिव्यांग बच्चों को छात्रवृत्ति/निःशक्त पेंशन संबंधी यूडीआईडी से संबंधित आवश्यक औपचारिकताएं शिविर स्थल पर पूर्ण करने, जिला शिक्षा अधिकारी को शिविर में सभी संकुल प्राचार्यों एवं प्रधानाध्यापक को निर्देशित कर विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति शिविर में सुनिश्चित करायें तथा विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी को शिविर में नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करने के निर्देश जारी करें।

जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विकासखण्ड स्तर एवं ग्राम स्तर पर कार्यरत लोकसेवकों को निर्देशित करें कि शिविर दिनांक को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिविर में उपस्थित होने हेतु सूचित करें एवं शिविर में उपस्थित कराने के लिए सहयोग प्रदान करें। जिला परियोजना समन्वयक, जिला शिक्षा केन्द्र सतना शिविर में सीडब्ल्यूएसएन मूल्यांकन शिविर में जिला परियोजना समन्वयक नोडल अधिकारी होंगे। विकासखण्ड स्त्रोत समन्वयक समस्त जनपद शिक्षा केन्द्र जिला मैहर सीडब्ल्यूएसएन बच्चो के मूल्यांकन शिविर में बच्चों को आधारकार्ड, बीपीएल कार्ड, राशन कार्ड, अध्ययनरत कक्षा का प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र एवं दो फोटो के साथ उपस्थित कराना सुनिश्चित करेंगे।

सतना मेडिकल कॉलेज में देर रात हुआ विवाद

कैंपस में गाड़ियों से की तोड़फोड़, पुलिस भी पहुंची लेकिन नहीं हुई शिकायत

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना के मेडिकल कॉलेज कैंपस में सोमवार की देर रात स्टूडेंट्स और ट्रेनी डॉक्टर के बीच जमकर विवाद हुआ। इस दौरान कैंपस में खड़ी बाइकों में भी तोड़फोड़ की गई। विवाद का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हुआ है। हालांकि इस मामले में अभी किसी की ओर से थाना में शिकायत नहीं की गई है।

पुलिस से नहीं की शिकायत: मेडिकल कॉलेज के 2ठ्ठस ईयर के स्टूडेंट्स और ट्रेनी डॉक्टर के बीच किस बात को लेकर विवाद हुआ? इसकी वजह सामने नहीं आई है। विवाद का पता लगाने के लिए कोलगवां टीआई सुदीप सोनी बल के साथ मौके पर पहुंचे थे। लेकिन किसी की ओर से कोई शिकायत नहीं होने पर खाली हाथ लौट आए। टीआई ने बताया कि यदि शिकायत प्राप्त होगी, तो आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नकाबपोश बदमाशों ने युवक को मारी गोली

हालत गंभीर, बाजार से घर लौटते समय हुई घटना

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के मऊ थाना क्षेत्र में पियारियां मोड़ पर सोमवार देर शाम एक युवक को संदिग्ध परिस्थितियों में गोली मारी गई। घायल युवक को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है।

घटना लक्ष्मीपुर खण्डेहा गांव निवासी गोलू (26) पुत्र मेवालाल सिंह के साथ हुई। जो अपने दोस्त विवेक सिंह के साथ खण्डेहा बाजार से घर लौट रहा था। पियारियां मोड़ के पास गोलू बाइक खड़ी कर पेशाब करने लगा। तभी नकाबपोश बाइक सवार दो अज्ञात बदमाश वहां पहुंचे। उसे गोली मारकर फरार हो गए। गोली युवक के दाहिने पैर में लगी।

घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने घायल गोलू को अस्पताल पहुंचाया। युवक ने बताया कि वह बाजार से घर लौट रहा था। तभी नकाबपोश बदमाशों ने उस पर हमला किया। इस मामले में एसपी अरुण कुमार सिंह ने कहा कि "घटना संदिग्ध प्रतीत हो रही है। पूरे मामले की गहनता से जांच की जा रही है। जल्द ही दोषियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

फिलहाल पुलिस बदमाशों की पहचान और घटना के कारणों का पता लगाने में जुटी है। स्थानीय लोगों में घटना को लेकर दहशत का माहौल है।

60 वर्षीय बुजुर्ग ने विक्षिप्त नाबालिग से किया रेप

24 घंटे में पुलिस ने किया गिरफ्तार, भेजा जेल

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना में मानसिक रूप से विक्षिप्त नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में बुजुर्ग ग्रामीण को जिले की सिंहपुर थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है।

सिंहपुर थाना प्रभारी अजय अहिरवार ने बताया कि नाबालिग लड़की (16 वर्ष) 29 दिसंबर की सुबह घर से बिना बताए कहीं चली गई थी। उसके नहीं मिलने पर परिजन तलाश करने लगे। लेकिन कुछ पता नहीं चला। कई घंटों बाद जब लड़की घर लौटी तो माता-पिता उसकी हालत देखकर सकते में आ गए।

टीवी देखने के बहाने बुलाया घर: काफी पूछने पर पीड़िता ने आरोपी रामविश्वास चौधरी (60 वर्ष) के घर टीवी देखने के लिए जाने की बात कही। जहां आरोपी ने अकेले में उसके साथ रेप किया। इस खुलासे के बाद परिवार के लोग पीड़िता को थाने ले गए। जहां उसके बयान पर दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के तहत कायमी कर 24 घंटे के अंदर आरोपी को पकड़ लिया गया। जिसे कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया।

किसानों को खाद के लिए लगानी पड़ रही लाइन

चित्रकूट में खाद की किल्लत से लोगों को हो रही परेशानी

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट में कड़ाके की ठंड के बीच किसानों की समस्याएं और बढ़ गई हैं। खाद की किल्लत के चलते किसानों को सुबह से ही लंबी कतारों में खड़े होने पर मजबूर होना पड़ रहा है। मानिकपुर तहसील के रामपुर में बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति के खाद केंद्र पर किसानों की भारी भीड़ लगी।

सुबह 5 बजे से जुट रहे किसान: भीषण ठंड के बावजूद किसान सुबह 5 बजे से ही खाद केंद्रों के बाहर पहुंच रहे हैं। ठंड में ठिठुरते हुए किसान अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। लेकिन खाद की उपलब्धता न होने के कारण उनकी समस्याएं दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। किसानों का कहना है कि पहले से ही खेती की लागत बढ़ चुकी है। ऊपर से खाद की किल्लत ने उनकी परेशानियों को और गहरा दिया है। कई किसानों को पूरी रात जागकर लाइन में लगना पड़ रहा है। लेकिन फिर भी उन्हें खाद नहीं मिल पा रही है। किसानों ने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि समय पर खाद उपलब्ध न कराना उनकी समस्याओं का मजाक उड़ाने जैसा है। उन्होंने मांग की है कि खाद की आपूर्ति में सुधार किया जाए। उनकी समस्याओं का समाधान निकाला जाए।

स्थानीय अधिकारियों ने कहा है कि खाद की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन समस्या के समाधान में अभी समय लग सकता है। किसानों का कहना है कि यदि जल्द ही उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो उन्हें मजबूरन आंदोलन करना पड़ेगा।

सरसों फसल में रोग प्रबंधन के लिए कृषि विभाग ने जारी की एडवायजरी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्यप ने सतना एवं मैहर जिले के समस्त किसानों से सिंचाई से संबंधित विशेष परामर्श साझा किए है। जिसमें उन्होंने समस्त किसान भाईयों को सलाह दी है कि वे सरसों में बिजाई के 35-40 दिन बाद पहली सिचाई करें तथा सिचाई के साथ बची हुई यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम अवश्य डालें। सिंचाई करते समय ध्यान रखे की हल्की सिंचाई ही करे व खेत में पानी खड़ा न होने दें। ज्यादा पानी लगाने से तथा पानी का ठहराव ज्यादा समय तक होने से मिट्टी में पैदा होने वाली फफूंद रोगों के फैलने की समस्या को बढ़ावा देता है। रोग प्रबंधन के बारे में बताया है कि तना गलन रोग की रोकथाम के लिए बिजाई के 45-50 दिन बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से पहला छिड़काव करे। तना गलन की रोकथाम के लिए दो छिड़काव करना आवश्यक है। दूसरा छिड़काव 65-70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से करें। साथ ही किसान भाई अपने खेतों में निरंतर निगरानी बनाये रखे। उन्होंने बताया है कि तापमान में लगाकार गिरावट होने से सरसों में सफेद रतुआ बीमारी के आने की संभावना बनी हुई है। इसके लक्षण खेत में दिखाई दे तो किसान 600-800 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन एम-45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें व 15 दिन के अंतर पर 2-3 बार छिड़काव करें। साथ ही मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही फफूंदीनाशक का प्रयोग करें।

कलेक्टर ने जिले वासियों को दी नव वर्ष की शुभकामनाएं

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने जिलेवासियों को नव वर्ष की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने मंगलकामना की है कि नववर्ष 2025 सभी के लिए सुख, शांति, सद्भाव, समृद्धि और सफलता लेकर आये। कलेक्टर वर्मा ने नागरिकों से अपील की है कि नूतन वर्ष में जीवन के प्रत्येक क्षण को प्रदेश के विकास और वंचितों के कल्याण के लिए अर्पित करने का संकल्प ले।

प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड ने जीता 12वॉ ग्लोबल सेफ्टी सम्मिट, सेफ्टी अवार्ड

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड -सीमेंट डिवीजन, सतना को सेफ्टी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु 12वॉ ग्लोबल सेफ्टी सम्मिट, सेफ्टी अवार्ड- 2024 प्रदान किया गया है। यह अवार्ड प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड की ओर से उपमहाप्रबंधक (सेफ्टी) विपिन कुमार एवं सहायक महाप्रबंधक (एनवायरनमेंट) सुमिताभ द्विवेदी ने दिनांक 23 दिसम्बर 2024 को नई दिल्ली सेफ्टी सम्मेलन में प्राप्त किया। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड - सीमेंट डिवीजन द्वारा सेफ्टी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मिले अवार्ड पर कंपनी के कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ श्री राकेश जैन, प्रेसीडेंट एवं प्लांट हेड श्री मनीष कुमार सिंह , वा मनीष कुमार सिन्हा सीनियर वाइस प्रेसीडेंट एचआरएम एंड कॉरपोरेट अफेयर्स एवम सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रसन्नता व्यक्त की और भविष्य में भी कम्पनी द्वारा सेफ्टी के क्षेत्र में अनवरत प्रतिबद्धता दोहरायी।

प्रिज्म जानसन लिमिटेड के एजीएम सीएसआर एंड पब्लिक रिलेशन देवेन्द्र मिश्रा ने बताया कि प्लान्ट परिसर में आने वाले सभी आगंतुकों, वेंडर, सप्लायर, सरकारी अधिकारी, कर्मचारी एवं श्रमिकों को सेफ्टी गैलरी में सेफ्टी इन्डक्शन ट्रेनिंग कराई जाती है, फिर प्लांट में प्लांट के खतरों एवं सुरक्षा सावधानियों के बारे मे बताया जाता है। कार्य के अनुरुप ये मॉडल बनाये गए हैं। प्लांट परिसर में प्रत्येक महीने सेक्शन वाइज आपातकालीन मॉक ड्रिल कराई जाती है।

जनसुनवाई में 37 प्रकरणों की हुई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर अनुराग वर्मा के निर्देशन में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित मंगलवार को जनसुनवाई में अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे एवं डिप्टी कलेक्टर एलआर जांगडे ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये आवेदकों की समस्यायें सुनी। जनसुनवाई में 37 आवेदकों की समस्याएं सुनी गईं और समस्याओं के त्वरित निराकरण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

जनसुनवाई में जमीन का सीमांकन कराने, अनुकंपा नियुक्ति, गरीबी रेखा में नाम जोड़ने, खाद्यान पात्रता पर्ची, दाखिल-खारिज कराने, प्रधानमंत्री आवास योजना, अवैध कब्जा हटाने, राशन कार्ड बनाने, विद्युत समस्या, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, जमीन का कब्जा दिलाने, चिकित्सा सहायता, रोजगार दिलाने, भरण-पोषण और संबल योजना के लाभ संबंधी आवेदन लेकर जनसुनवाई में पहुंचे।

मैहर जिले की जनसुनवाई में आये 26 आवेदन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने मंगलवार को जिले के दूर-दराज क्षेत्रों से आये 26 आवेदकों की समस्यायें जनसुनवाई में सुनी और उनके निराकरण के संबंध में संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। इस मौके पर अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, एसडीएम विकास सिंह सहित अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।